मूल्य 25/-

अंगना

मातृशक्ति के आपन भोजपुरी पत्रिका

साल – 3 अंक – 7 मई से दिसम्बर – 2011 (संयुक्तांक)

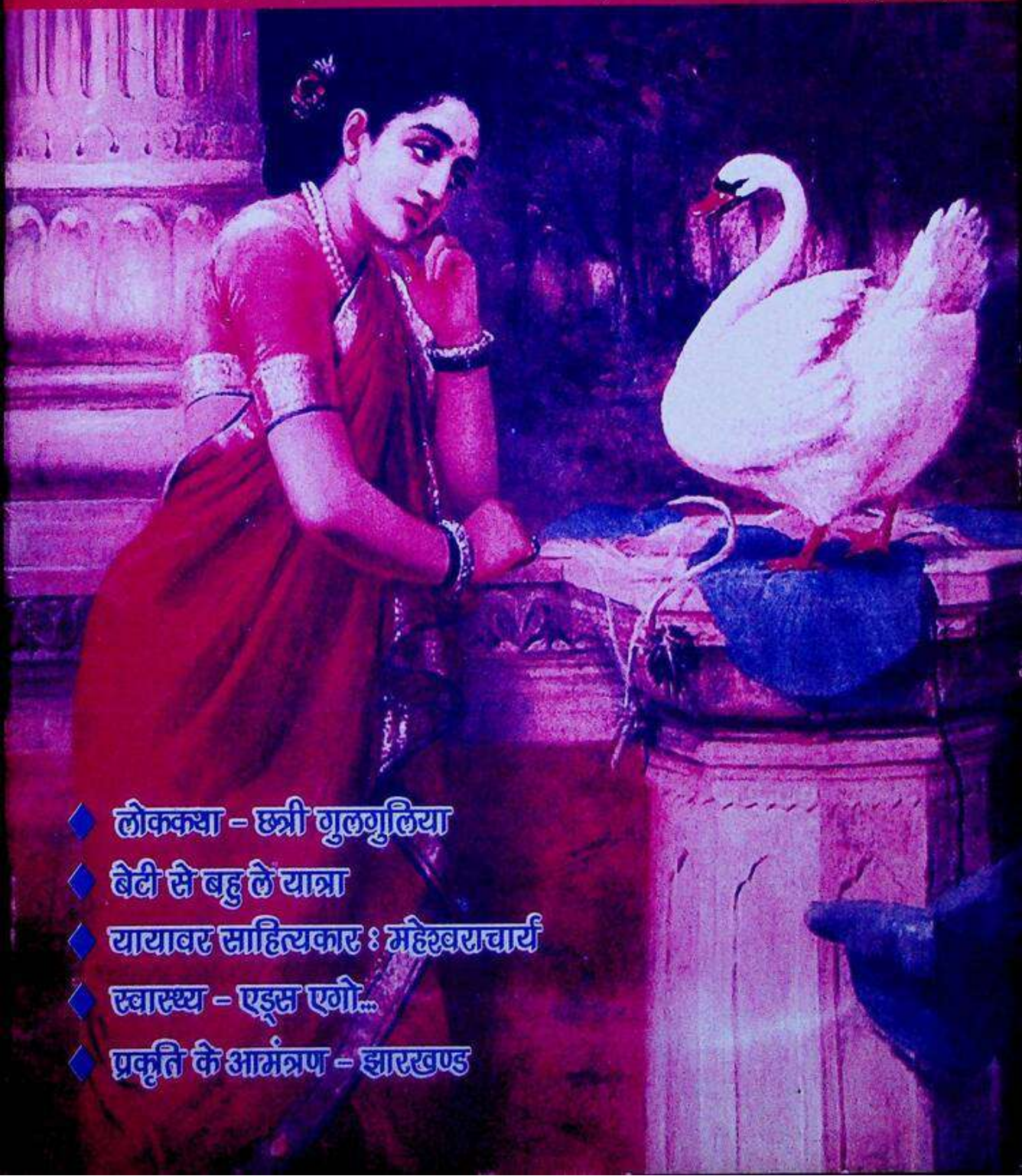

- लोककथा – छत्री गुलगुलिया
- बेटी से बहु ले यात्रा
- यायावर साहित्यकार : महेश्वराचार्य
- स्वास्थ्य – एड्स एगो...
- प्रकृति के आमंत्रण – झारखण्ड

निहोरा

'अंगना' के सदस्य आ नेही-छेही भाई-बहिन से

रउआ 'अंगना' पढ़ रहल बानी आ कृपापूर्वक आपन आशीर्वाद, सलाह, प्रतिक्रिया आ रचना दे रहल बानी। 'अंगना' परिवार बहुते आभारी बा। 'अंगना' के आउर विस्तार आ अंजोर देवे खातिर रउआ सभे के एकरा से आगे बढ़ के कुछ आउर करे के होई।

- ❑ आपन हित-नाता, सखी-सलेहर, दोस्त-मीत के एह 'अंगना' से परिचित कराई, एकरा से जोड़ीं।
- ❑ भोजपुरिये खाली ना, बलुक गैर भोजपुरी-भाषा लोगिनो के एह पत्रिका से हर स्तर प जोड़ीं। एह से ओग लोगिन के बीच भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के प्रचार-प्रसार होई आ समझ बनी।
- ❑ जेतना हो सके सदस्य बनाई आ बनीं।
- ❑ अपना दुकान, प्रतिष्ठान, उद्योग भा कार्यस्थली के विज्ञापन के रूप में 'अंगना' के आर्थिक सहयोग दीहीं-दिआईं।
- ❑ अपना अंगना में होवे वाला शुभ आ मंगल कार्य में इहो 'अंगना' के शामिल करीं - दान आ मान दीहीं।
- ❑ भोजपुरी के घर-अंगना में दीया बारत एह पत्रिका के राउर शुभकामना, आशीष आ आर्थिक सहयोग के जरूरत बा। विश्वास करीं ई राउरे अंगना ह, केहू दोसर के ना !

'अंगना' भोजपुरी महिला पत्रिका के
प्रकाशन खातिर पत्रिका परिवार के
बहुते-बहुत शुभकामना

राजेन्द्र 'राज'

सांस्कृतिक सचिव,
जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्
जमशेदपुर

www.bhojpurisahityangan.com

संपादक

डॉ० संध्या सिन्हा

सह-संपादक

रत्ना चौधरी

उप-संपादक

डॉ० जूही समर्पिता, आशिष

प्रबंध-संपादक

पद्मा मिश्रा, सुतपा विश्वास

संपादन परामर्श

डॉ० सत्यदेव ओझा, नागेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पाण्डेय कपिल, भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश्वर प्रसाद सिंह 'दिनेश', गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश', प्रो० डॉ० शत्रुघ्न कुमार, जय बहादुर सिंह

संपादक मंडल

गंगा प्रसाद 'अरुण', अजय कुमार ओझा, राजेन्द्र राज, प्रतिभा प्रसाद, ज्योत्सना अस्थाना

सहयोग

माधुरी मिश्रा

संपर्क

A/IV/39, एन० एम० एल० फ्लैट्स, एग्रिको, जमशेदपुर - 831009 (झारखण्ड)
फोन - 9835345653, 9661139968 (M), 0657–2346103 (R)
E-mail: drsandhyasinha@gmail.com

मुद्रक : शिक्षा भारती मुद्रणालय
1/27, काशीडीह, जमशेदपुर

सहयोग राशि

देश में		विदेश में
एक प्रति	– 18/–	US $ 5 (डालर)
वार्षिक	– 50/–	US $ 15 (डालर)
पंचवार्षिक	– 250/–	US $ 70 (डालर)
आजीवन	– 1000/–	US $ 300 (डालर)

अंगना

मातृशक्ति के आपन भोजपुरी पत्रिका

अंक–7 वर्ष–3 मई–दिसम्बर – 2011

अनुक्रम

❑ सम्पादकीय 2

❑ कहानी / लोककथा / लघुकथा

खोट – कन्हैया सिंह सदय 3
छत्री गुलगुलिया – सुशीला पाण्डेय 14
गंगाजल – सुरेन्द्र प्रसाद गिरि 17
बेटी बोलली – कृष्ण कुमार 27
बातचीत – छाया प्रसाद 28

❑ कविता / गजल / गीत / लोकगीत

मन जुड़ाइल रहे – रघुनाथ प्रसाद 9
ग़ज़ल – आसिफ रोहतासवी 11
गजल – राम यश 'अविकल' 16
नज्म – डॉ० जवाहरलाल 'बेकस' 22
बिछल चाँदनी – पद्मा मिश्रा 33
खेलवना – ब्रजमोहन प्रसाद अनारी 36
ग़ज़ल – रिजवान वास्ती 38
जोग टोना – बबीता रौशन 16
विवाह गीत – अनीता पाण्डेय 18
अंजोरिया झुटपुटाइल... – डॉ० सन्ध्या सिन्हा 18
अंगना तीरथधाम – हरिद्वार प्रसाद किसलय 29
हरदी के गीत – डॉ० अलका श्रीवास्तव 27
तेवरी – डॉ० राजकुमार सिंह 'कुमार' 27
सोहर – भिखारी ठाकुर 37

❑ व्यंग्य / ललित निबंध / निबंध

आज के अकिला फुआ – गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' 10
सुपनेखा के पाती – ब्रजमोहन सिंह देहाती 19
प्रकृति के आमंत्रण... – डॉ० संध्या सिन्हा 23

❑ आपन लोग / स्वास्थ्य के सुगबुग / विविध / तनी हँसी

यायावर साहित्यकार... – नागेन्द्र प्रसाद सिंह 12
प्रभावती जी के... – गजेन्द्र प्रसाद वर्मा 'मोहन' 31
डॉ० निर्भीक : भाव... – दिनेश्वर प्रसाद सिंह 'दिनेश' 34
एड्स एगो खतरनाक... – डॉ० आशा गुप्ता 21
का रउआ जानतानी, तनी हँसी, काकी कहली ह.. 29, 37, 16
बेटी से बहु ले यात्रा – प्रतिमा प्रसाद 30

❑ चउका–चुल्हा – संगीता लाल 38

सहयोग राशि ड्राफ्ट मा मनीआर्डर द्वारा 'संध्या सिन्हा', संपादक : 'अंगना' के नाम से भेजल जा सकेला

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय

अंगना के संयुक्तांक, अंक-7 अपना भरपूर कलेवर के साथे प्रस्तुत करे के चेष्टा कइल गइल बा। तीज-त्यौहार से व्यस्त दिन गुजरत जात बा। जिनगी मौसम मिजाज के समझ-बूझत आ मजा लेत अपना दिशा आ गति से चलत जात बिया। रूक के, ठहर के सोचे के कवन काम बा, जब सब काम निकलत जात बा तब ? बाकिर एगो बात कुछ दिन से हुरपेटले बा कि धीरे-धीरे पुरनकी साहित्यिकारन के पीढ़ी अनन्त में तिरोहित होत जात बा, त नयकी पीढ़ी का उहे गति आ तेवर से उभरत बिया। बहुते दुःख भइल कि कई एक गो यशस्वी आ दिग्गज साहित्यकार हाले फिलहाल सरग-सिधरलीं, जेकर क्षतिपूर्ति संभव नइखे। खास क के ओह स्तर के खाँटी निष्ठा आ समर्पण के। स्व० महेश्वराचार्य, स्व० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', स्व० गणेश दत्त किरण, स्व० स्वर्ण किरण इत्यादि। एक-एक के इनकर विदाई भोजपुरी साहित्य के भविष्य खातिर शोक आ चुनौती दूनूं बनत जात बा। 'अंगना' परिवार एह बड़-बुजुर्ग यशस्वी, कर्मठ आ संपूर्णतः समर्पित भोजपुरी माई के सपूतन के योगदान कोटिशः प्रणाम करत श्रद्धांजलि समर्पित कर रहल बा। साथहिं नवकी पीढ़ी के भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में आह्वान कर रहल बा, उनका पूरा वजूद के साथे।

'अंगना' पहिलहीं से कह रहल बा कि मातृशक्ति के समर्पित ई एगो पारिवारिक पत्रिका बिया। एह में समाज के सभे खातिर सामग्री होला आ सभे खातिर समान अवसर होला। अपने सभे के प्यार आ सहयोग (आर्थिक आ वाचिक दूनू) एकर राह प्रशस्त कर रहल बा, एकर सार्थकता सिद्ध कर रहल बा। खास क के नवका लेखन, महिला लेखन खातिर ई हर जोखिम उठावे खातिर तैयार रहेले, हँ, गुणवत्ता से समझौता ना कइल जा सकेला - एह से रउओ अंगना के ओर कदम बढ़ाई।

विजयादशमी प अपने सभे के बहुत-बहुत शुभकामना। विजयादशमी अन्याय आ अनाचार पर न्याय आ आचार के विजय के गाथा ह। एह त्यौहार के आउर महत्व बढ़ जाता कि एह ओर हमनी के धेयान विशेष रूप से जाए। अन्ना के आचार आ न्याय के गुहार के एह दिन बहुत इयाद परल। साथहिं आजे गद्दाफी के संहार के खबर मिलल। सबकुछ के बाद रोजे-रोज टी० वी० प अन्ना आन्दोलन प खींच-तान, गाभी-ताना आ आरोप-प्रत्यारोप-विडम्बना में डूबत-उतरात पूरा भारतीय समाज किं-कर्त्तव्यविमूढ़ हो रहल बा। का जाने कब कृष्ण के अवतरण होई जे न्याय-अन्याय, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, हर्ष-शोक आ जीवन-मृत्यु के परिभाषा वर्तमान संदर्भ में तय करीहें साथहिं कर्मयोग के पाठ पढ़ा सकिहें।

गहमागहमी में एगो महत्वपूर्ण बात छूट ना जाए - अबकी बेरा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, जमशेदपुर, झारखण्ड के पुरान खाँटी धरती प सम्पन्न होखी। लौहनगरी में निहायत नरम दिल सम्हरले हमनी रउआ सभे के रास्ता ताकत बानी। रउरा घूमे-घामे आ प्रकृति के गोद में बसल एह राज्य के पर्यटन के आनन्द उठावे खातिर कुछ पर्यटन-स्थल के सचित्र वर्णन प्रस्तुत बा उम्मेद बा रउरा कामे आई। आदिवासी बहुल सरल, सादगी भरल आ कतिपय उदार संस्कृति के देखे-बूझे आ ओकर सोन्ह गंध के मजा लेबे के अवसर हाथ से मत जाये देब।

'अंगना' परिवार के तरफ से दिवाली, गोधन, दवात पूजा, छठ, क्रिसमस आ नया साल के बहुते-बहुते शुभकामना स्वीकार करीं। अंगना में राउर रचना, सहयोग, प्रतिक्रिया आ प्यार के इन्तजार रही। विश्वास करीं 'अंगना' राउरे ह केहू दोसर के ना।

◆

www.bhojpurisahityangan.com

कथा–कहानी

खोट

❑ कन्हैया सिंह 'सदय'

कार में बेटा का लगे बइठल दुलहिन के उघार मुंह देख के सास चकचिहात कहली – "बहू, अभी मुंहदेखाई के रसम बाकी बा, घूघ तान ल।'

'घूघ तान लिहें त दउरा में डेग कइसे डलिहें ? ढिमिला ना जइहें ? मुंहदेखाई त मंगनी से लेके जयमाल ले होते आइलि बा...।'

बेटा के जवाब सुन के महतारी उदास हो गइली। सोचली, आजुवे से बहू के एतना तरफदारी करे लागल, आगे का होई ? आज के फैशनेबुल पतोह घूघ कहां तानत बाड़ी सन, केश–विन्यास बिगड़ जाता। पतोह सास के चेहरा पढ़ली आ उनका भावना के आदर करे बदे घूंघट ओसहीं सरका दिहली जइसे कवनो सांच प परदा डालत होखस।

सांच प परदा त ऊ कुंवारे से डालत आइल बाड़ी। बाकिर, सुहागरात में सच्चाई सामने आइये गइलि।

दीप्ति आ दिनेश के दोस्ती तब शुरू भइल रहे जब ऊ लोग कॉलेज में स्नातक अंतिम बरिस के छात्र रहे। दीप्ति उहां के खूबसूरत लइकिन में एक रही। उनका रंग रूप आ सुंदरता के हर नजर गवाह रहे। चंपा के फूल अस गोर रंग, तराशल हीरा अस छरहर बदन, नागिन अस बलखात चाल, बादर अस लहरात बाल, कमल के कोढ़ी अस कमनीय आंख, परास के फूल अस होंठ आ जोन्ही अस दांत देख के भला केकर मन ना डोल जात रहे ?

एक दिन जब ऊ कॉलेज के गेट से बाहर निकललो, कुछ गुंडा अपहरण करे के नेत से जब उनकर हाथ पकड़ के कार में बइठावे लगलें सन, त दिनेश के पुरूष ललकरलस। ऊ हाथ के कॉपी–किताब दूर फेंक के शेर अस दहड़ले आ बाझ अस झपट के दीप्ति के छोड़ा लिहलें। फेर त सभ लइका मिल के ओह लोग के अइसन कचूमर निकललें सन कि दोबारा मुंह ना देखावल लोग। ई सभ कुछ फिल्मी अंदाज में भइल रहे। बाकिर, एही जमीन प दीप्ति–दिनेश के प्यार, अंखुवाइल, बढ़ल, फुलाइल आ वैवाहिक वचनबद्धता के पराग से गमगमाइल।

दिनेश साइंस के छात्र रहन आ दीप्ति कॉमर्स के। स्नातक पास कइला के बाद दिनेशके नांव पूना के कवनो नामी कॉलेज लिखाइल। दीप्ति पढ़ाई छोड़ के कम्प्यूटर के बेसिक कोर्स कइली आ नौकरी के तलाश में जुट गइली। उनकर पिता अवकाशप्राप्त कर्मी रहन आ छपरे में आपन घर बनवा के सपत्नीक रहत रहन। ऊ चाहत रहन, जेतना जल्दी हो सके बेटी के हाथ पीयर कके दायित्व–मुक्त हो जास। बाकिर, दीप्ति उनकर हर प्रयास विफल क देत रही। ऊ खुद के आत्मनिर्भर बनवला के बादे बियाह के इच्छुक रही। दुरभागसे, उनको कोशिश व्यर्थ हो जाति रहे। विडंबना ई रहे कि नौकरी के लिखित–मौखिक परीक्षा में त ऊ पास क जात रही, मगर मेडिकल में छंट जात रही। जब उबिया गइली त सोचली, कवनो सरकारी भा गैर सरकारी संस्थान में हमार नौकरी लागे से रहलि। काहें ना अपना खूबसूरती आ जवानी के हाथेयार बना के बेरोजगारी के जंग जीतल जाव। अपना बदनसीबी के रोना रोवला के का फायदा। कवनो निजी संस्थान से जुड़ला में हरज का बा ? एह निर्णय तक पहुंचे में उनकर

www.bhojpurisahityangan.com

तीन साल के कीमती समय हाथ से निकल गइल।

एह बीच दिनेश, वनस्पति विज्ञान से एम0 एस0 सी0के परीक्षा में विशिष्टता का साथ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हो चुकल रहन। उनकर नौकरी पूने में पर्यावरण शोध संस्थान में लाग चुकलि रहे। बाबूजी छपरा कोर्ट में सरकारी वकील रहन। मात्र दू गो संतान। जेठ बेटी के शादी त हो चुकलि रहे। अब बेटा के बारी रहे। आर्थिक सम्पन्नता का साथ उनकर आपन मकान आ गांवों प खेती–बारी रहे। दिनेश जब कबो छपरा आवस, दीप्ति से जरूर मिलस। बाकिर, ऊ अपना असफलता आ निराशा के राज उनका से ना बतावस। ...उनकर सहानुभूति भा एहसान लिहल ना चाहस। फोनो प औपचारिक बतकही के सिवा आउर कुछ बात ना होति रहे।

अपना सोच के साकार करे खातिर अब ऊ नियमित रूप से इन्टरनेट प भेकेंसी देखे लगली। संयोग से एक दिन पूने के एगो विज्ञापन कंपनी के भेकेंसी लउकलि। ऊ तत्काल फारम भरली। कुछ दिन बाद, साक्षत्कार खातिर बोलावल गइली.आ चुन लिहल गइली। नियुक्ति–पत्र मिलला के बाद जब ई खुशखबरी, दिनेश के बतवली त उनका खुशी के ठेकाना ना रहल। ज्वाइनिंग डेट से एक दिन पहिलहीं, ऊ पूना पहुंचली। स्टेशन प दिनेश अगुवानी में खड़ा रहन। ऊ उनका से अपना डेरा प चले के आग्रह कइलें। बाकिर, ऊ इनकार क दिहली। पुरूष के विश्वसनीयता प उनका पहिलहीं से शक रहल बा। इज्जत का साथ दोस्ती के समझौता, जोखिम के निमंत्रण अस लागल। लाचार होके दिनेश के एगो होटल में कमरा बुक करे के परल जहां दू दिन ले ऊ ठहरली। नौकरी ज्वाइन कइला के दोसरके दिन उनका नजदीक के कवनो गर्ल्स होस्टल में भाड़ा के एगो कमरा मिल गइल आ ऊ शिफ्ट क गइली।

अब जब कबो ऊ लोग मिले, बियाह प्रस्ताव पर जरूर चर्चा करे। सजातीय भइला के बावजूद अभिभावक लोग के मनावल आसान ना रहे। दुनू जाना महतारी लोग के ढाल बनावल। काफी मशक्कत के बाद दुनू परिवार राजी भइल। सबसे पहिले मंदिर में मुंह देखाइ भइलि। दीप्ति त लाखन में एक रही। वकील साहेब गद्गद आ वोकिलाइन मंत्रमुग्ध। एने दिनेश कहां कम रहन। प्रतिष्ठा औ पौरूष से सम्पन्न व्यक्तित्व। दीप्ति के माई–बाबूजी का देखते पसंद पर गइलें। बियाह के औपचारिकता दनादन पूरा होखे लागल आ दिनेश संग दीप्ति के शादी धूमधाम से सम्पन्न हो गइलि। बाकिर, मधुर मिलन के बेरा में एगो अइसन बवंडर खड़ा भइल जवना से बरिसन के रोपल बिरवा जर–सोर से हिल गइल।

सुहागरात के सजल–सवाजल पलंग प दुलहिन के रूप में दीप्ति ओसहीं बइठल रही जइसे चान के गोदी में चांदनी। दुनू बेकत अपना विगत प्रेम–प्रसंगन के इयाद ताजा करे में लागल रहन। एही बीच दिनेश के मुंह से अनासे निकल परल – 'दीप्ति! आज त दुलहिन के रूप में तू अइसन लागत बाड़ू जइसे सरग से कवनो अप्सरा। प्रकृति के हर रंग तोहरा अंग में उतर आइल बा। अड़हुल के फूल अइसन लाल चुनरी में सरसों के फूल अइसन गोर बदन देख के त ऋषियों–मुनि के तपस्या भंग हो जाई। रंग, प्राकृतिक होखे भा बनावटी, जिनिगी के रंगीन बनावे में एकर केतना महत्व बा, तोहरा के देख के केहू सहजे अंदाज लगा सकल बा...।' सुनते दीप्ति रिसिया गइली।

'हर बतकही में रंगन के चर्चा कइल बंद करीं। इहां वनस्पति–विज्ञान के क्लास नइखे होत। एकनी से हमरा सख्त नफरत बा। ई निगोड़ा रंगे त बाड़े सन जवन हमरा मनचाहा कैरियर के चौपट क दिहले सन।' फेर त उनका

www.bhojpurisahityangan.com

मुंह से निकलल हर वाक्य जीव के जंजाल बन गइल।

'का मतलब ? हम समुझ ना पवनी। साफ–साफ बोल ना...।' दिनेश के शंका बढ़ियाइलि।

'हमरा आंखिन में आंशिक वर्णान्धता बा। यानि हम पारशियल कलर ब्लाइंड बानी। कवनो चीझ के देखे भा पढ़े–लिखे में हमरा कवनो परेशानी ना होखे। बाकिर, रंगन के सही पहचान हम ना कर सकीं। हर रंग, बदरंग होके लउकेला। एही दोष का चलते, नौकरी के लिखित–मौखिक परीक्षा में कय बेर पास कइला के बादो हम मेडिकल टेस्ट में छांट दिहल गइनी आ हार पाछ के प्राइवेट कम्पनी ज्वाइन करेके निर्णय लिहनी।'

ई सुनते दिनेश के होड़ उड़ गइल। चेहरा भुआ हो गइल आ कंठ स्वरहीन। कुछ देर ले ऊ दीप्ति के निहारत रह गइलें। बहुत प्रयास के बाद जब सामान्य भइलें त हकलात पूछलें – 'बियाह से पहिले ई बात तूं काहें ना बतवलू ?'

एह से कि हम रउरा से बहुत प्यार करिले। खुद में खोट देखा के अपना नेही के ना खोवल चाहत रहीं। रउरो त हमरा बारे में ठीक से जाने के कबो कोशिश ना कइनी। कहल जाला, प्यार आ जंग में सभ कुछ जायज होला। फेर आपन खोट, के ना छिपावेला ?'

'तू प्यार ना, हमरा से छल कइले बाड़ू। अपना सुन्दरता के जाल में फंसा के हमरा अरमानन के गला घोंटले बाड़ू। अपना स्वार्थ–सिद्धि खातिर हमरा के धोखा देले बाड़ू... बंधक बनवले बाड़ू। तूं हमार जीवन–संगिनी बनें जोग नइखू... हम तोहर परित्याग करत बानीं।' कहत ऊ दीप्ति से विलग हो गइलें।

'ई का कहत बानी जी ? एगो छोट–मोट खोट का चलते रउरा हमरा के त्याग देब ? हम ना जानत रहीं कि राउर प्यार एतना बुज़दिल आ कमजोर बा। ठोक बजा के सउदा काहें ना बेसहनी ? भरल समाज, समाज में देवता–पीतर के साक्षी बना के साथ निभावे के प्रतिज्ञा कइनी आ अभी एको रात ना गुजरलि कि ओकरा के भंग करे प तत्पर हो गइनी। रोग केहू के बस में बा ? ऊ कबो केहू के हो सकत बा। राउरे कवनो रोग भा खोट के बारे में हमरा पता चल जाव त का हम रउरा के छोड़ देब ? एगो भारतीय नारी भइला का चलते त कबो ना। जवना खोट के हम छोट समुझत अइनी ऊ आज भयंकर अभिशाप बन के खड़ा हो गइल। हाय रे हमार भाग। हमरा, बियाह से पहिलहीं अपना रोग के बारे में बता दिहल चाहत रहे... दोस्ती के गहराई के थाह लाग गइल रहित। खैर, अबहियों ढेर बात नइखे बिगड़लि। हमरा भीतर के निरइठ औरत जीयत बिया। होनी के केहू टार नइखे सकत। हो सके त हमरा के माफ क दीं...।'

'तूं चाहे जेतना दलील द, हम तोहरा के माफ नइखीं कर सकत। आजे से तोहार हमार रास्ता अलग। ई हमार फैसला बा, एमे तर्क के कवनो गुंजाइश नइखे। विश्वासघात के फल भोगहीं के होई। हम काल्हें सभका सामने भंडाफोड़ करब आ तोहरा बाबूजी के बोलायेब...।'

'अइसन मत करीं, हम हाथ जोड़त बानी। जवना बियाह खातिर हमनी अपना माई–बाबूजी के आगे नाक रगड़नी...खुशामद कइनी, ओह लोग के, एतना जल्दी ई दुखद निर्णय सुनावल उचित ना होई। हमनी मुंह देखावे लायेक ना रह जायेब। दुनू परिवार के प्रतिष्ठा आ खुशियन प वज्रपात हो जाई। रउरा हमार परित्याग करे चाहत बानीं, क दीं। राउर फैसला हमरा मंजूर बा। हम अपनी गलती के सजाय भोगे प तइयार बानी। बाकिर, पुरान दोस्ती के कसम, कम से कम साल भर

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर एह राज के जग जाहिर मत करीं। तलाक के बाद त सभका पता चलिये जाई।' कहत दीप्ति सुबक परली।

'ठीक बा, हम तोहार प्रस्ताव स्वीकार करत बानी। दू दिन आउर इहां रहे के बा। एह बीच,एह राज के छिपावे खातिर हमनी सामान्य पति–पत्नी के अभिनय कइल जाई। दिन में बोलल–बतियावल जाई। बाकिर, रात में एह प्रसंग प कवनो चर्चा ना होई। डबल बेड पलंग सट के ना रही...।'

'त काहें ना एह जिनिगी के शुरूआत अभिये से कइल जाव।'

'ठीक कहत बाड़ू....।' तनिये देर में नदी के जल प्रवाह सूख गइल आ दुनू किनारन का बीच एगो अभेद सन्नाटा पसर गइल।

इहे सिलसिला दू रात–दिन चलल। शादी के चउथका दिन पूना जाये के रहे। सुबहे से तइयारी होखे लागल। आपन–आपन सामान अलग–अलग अटैचिन में रखाये लागल।

दू दिन ले सास, सफल दाम्पत्य जीवन के गुर सिखावत गइली आ पतोह अनुशासित चेला अस झेलत गइली। बाकिर, जाये के दिन जब ऊ कहली – 'बेटी, एहवाती तबे पूरन होले जब ऊ महतारी बनेले। घर में संतान देखे खातिर हमार बाया छछनत बा। जेतना जल्दी हो सके हमार मनसा पूरा क द...।' तब दीप्ति अपना संयम के रोक ना पवली। कहली – 'अम्मा जी! एतना जल्दी का बा ? अभी त हमार उमिर कमाये के बा, काहे फिगर खराब करावे प तुलल बानी। लरकोरी त हम अपना जवानी के अंतिम चरन में बने चाहब। अगर, राउर बेटा हमरा बात प राजी होइहें। जननी बने से पहिले आर्थिक सम्पन्नता जरूरी बा। मातृत्व प्राप्ति, पुरूष प्रभुत्व के स्वीकृति ह। ई एगो अइसन कमजोरी ह जवन सदियन से नारी के शक्तिहीन, बेवस आ लाचार करत आइल बिया।'

'आई हो दादा, ई का कहलू ? देख, अइसन करबू त हम बेटा के दोसर बियाह क देब... कइसन बाड़ू हो ? ई सभ कहे में तोहरा लाजो नइखे लागत।'

'हमरा प काहें खिसियात बानी ? अपना बेटा के समुझाईं। ऊ जो चहिहें त हम प्रतिरोधो ना करब। राउर मनसो पूरा होई। बाकिर ऊ त...।'

एतने में दिनेश टेम्पू लेके आ गइलें। सामान लदाये लागल। दुनू बेकत दही–गुड़ से मुंह जुठियवलें, पवलगी कइलें आ टेम्पू प बइठ गइलें। जाहिर बा, मनमोटाव में यात्रा आनंददायक ना होले। गाड़ी प चढ़ते दुनू जाना अपना–अपना बर्थ प पसर गइलें। बोलाचाली, खाली नाश्ता आ भोजन तक सीमित रहल। ...आ कसहूँ ओह मनहूस सफर के अंत भइल। दुनू जाना अलग–अलग टेम्पू से अपना–अपना डेरा प पहुंचलें।

अब पूना पहिले अइसन ना रह गइल। जहां कबो, मेल–मिलाप, हंसी–मजाक, मौज–मस्ती आ आत्मीयता के प्रदर्शन होत रहे, उहां आक्रोश, असंतोष, पीड़ा आ बेचैनी के साया मड़राये लागल। कबो–कबो फोन प औपचारिक बात जरूर हो जाति रहे। बाकिर, भेंट–मुलाकात त रस्ते–घाट में होति रहे। हं, एगो नयकी विकृति जरूर देखे में आइलि। दुनू जाना एक–दोसरा के डेरा के आसपास के लोगन से आत्मवत् संबंध बनवलें आ रोज–रोज के गतिविधियन क जानकारी हासिल करे लगलें। ई ओह लोग के घोर आशंका आ व्यापक मोह भंग के परिणति रहे।

कुछ दिन बाद वियोग आ पछतावा के दरद से छटपटात दिनेश के सोच में बदलाव लउकल। अब ऊ जब कबो अकेल परस, विचार मंथन के सिलसिला शुरू हो जाव – '...परित्याग के बात

www.bhojpurisahityangan.com

बोलल ठीक ना रहे। हम दीप्ति के नजर में गिर गइनी। का सोचत होइहें ऊ हमरा बारे में। उनकर प्यार के महल, हमरा एके शब्द से भहरा के गिर गइल होई। दीप्ति अइसन लड़की के चहेता त लाइन लागल बाड़ें। फेर ऊ काहें हमरे से प्यार कइली। उनकर प्यार विश्वसनीय बा। हमहीं उनका प्यार के मोल ना समुझ पवनी।'

...खोट कहाँ नइखे ? केकरा में नइखे ? चानो में दाग बा, सूरूज में ग्लोबल वार्मिंग के प्रवृति बा, पानी में प्रदूषण बा, हवा में वायरस बा, समुन्दर में खारापन बा, गुलाब कंटइला बा, कमल गंधहीन बा, तबो त ई सभके सभ शोभनीय, वंदनीय आ ग्रहणीय बाड़ें। संसार में बा कुछ अइसन, जवना में खोट नइखे ? जहां गुन बा उहें अवगुन बा। केहू निरापद आ निरामय नइखे। अइसन हाल में बिना समझौता के जीयल संभव नइखे...।

...हम कवन दूध के धोवल बानी। हमहूं त कय बेर अवैध संबंध स्थापित करे में नइखीं हिचकल। दीप्तियो के त हम अपना डेरा प राखे चाहत रहीं। ओकरा पीछे हमार मनसा 'लीव इन रिलेशनसीप' के रहे। बाकिर, ऊ त एको दिन हमरा साथे ना रहे चहली। चालाकी से छटक के अपना रहे के व्यवस्था दोसरा जगे क लिहली। हमरा से बेसी चरित्रवान त ऊ बड़ले बाड़ी...।

...बियाह से पहिले कवनो लड़का–लड़की के अंदरूनी रोग के बारे में पता लगावल एतना आसान बा का ?... ई, जन्म–जनमांतर के रिश्ता ह। एकरा के तुरल, अपराध आ भारतीय संस्कृति के अपमान जइसन बा। एह घरी नू लड़की देखल–देखावल जाता। पहिले ई सभ कहां होत रहे। जोड़ी–मिलान, भाग्य आ भगवान के भरोसे होत रहे आ दुनू पक्ष एकर सहज स्वीकृतियो दे देत रहे। आज नू मीन–मेख निकालल जाता। सभका फिलिम के हीरो–हीरोइन चाहीं। इहे वोजे बा कि आज केतना लड़का–लड़की लोग कुंवार रह जाता। दहेज का चलते लड़किन के भ्रूण हत्या आ जन्म दर में दिनों–दिन गिरावट, आवेवाला समय खातिर खतरा के घंटी बा। तब बेटहा लोग, बेटिहा से लड़की मांगे खातिर छिछियात फिरी। तलाक के बाद हमरो के, का कवनो बेटिहा आपन लड़की देबे चाही ? हम सम्पन्न घराना से बानी, शिक्षित आ नौकरीशुदा बानी ते से नू घमंडे चूर बानी... नखड़ाबाजी कर रहल बानी। वरना आजो केतना जाना के हाड़े हरदी नइखे लागत, भलहीं पइसावाला बाड़ें..।

...अब त कमान से तीर निकल चुकल बा। वापस कइसे होई ? हं, आपसी विचार–विमर्श के ढाल से एकरा के प्रभावहीन कइल जा सकत बा।, शब्द, सभ समस्यन के जड़ आ समाधानो होला। समस्या–मूलक शब्दन के अंत कइल जरूरी बा। बाकिर, ऊ पहल करस तब नू ? उनका मिले–जुले के चाहीं। पति–पत्नी के रिश्ता में दरार परल बा, दोस्ती के रिश्ता में त ना...।'

एने दीप्ति के हाल ओह सुग्गा अइसन भइल रहे, जवन सेमर–फूल खाये खातिर महीनवन टाही लगावेला। बाकिर, जब ऊ तइयार होला, चोंच मारते रूई बनके उधिया जाला। ऊ जब कबो एकांत में बइठस, मानसिक संघर्ष चले लागे – '....का हम सांचहूं दिनेश से छल कइले बानी ? का हमरा उनका से उम्दा आ सुखी परिवार ना मिल सकत रहे ? हमरा खातिरे त बेटहो पक्ष से कय गो रिश्ता आइल रहे। बाबूजी, हमरा आंशिक रंगांधता के बारे में बतावतो रहीं। तबो ऊ लोग तइयार हो जात रहे। हमहीं आत्मनिर्भर बने आ वचनबद्धता निभावे खातिर इनकार क देत रहीं। सच्चा प्यार, गुन–अवगुन दुनू के अंगीकार करेला। ऊ आन्हर, बहिर दुनू होला। शादी, गुड़िया के खेल ह का ? देस तलाक, करस दोसर बियाह,

www.bhojpurisahityangan.com

नाकन चना ना चबवा दिहनी त हमरो नांव दीप्ति ना। ई पुरुष, औरत के समुझत का बा ? गोड़ के जूता, कि दासी ? भरम तुरल जरूरी बा....।

...शक्ति स्वरूपा नारी के बेवसी आ लाचारी के मुख्य वोजे बा – अशिक्षा, बेरोजगारी, पुरुष–प्रधान सामाजिक व्यवस्था आ आत्म विश्वास के कमी। हम एह चुनौतियन के मुकाबला करब। इहां सांच बा कि नर–नारी के जिनिगी एक दोसरा के बिना अधूरा होले। तलाक के बाद हमरो बियाह आसान ना होई। वैवाहिक जीवन के सफलता आपसी सूझबूझ आ समझौतावादी दृष्टिकोण में निहित बा। मगर, एकरा खातिर हम उनका लगे गिड़गिड़ावहूं ना जाइब। अगर ऊ अपना अहंकार के त्याग कके मिले चहिहें त रोकबो ना करब। बोलइहें त चलियो जाइब। पत्नी का रूप में ना सही, एगो दोस्त त ऊ आजुवो बाड़ें...।

एही उधेड़बुन में छव महीना बीत गइल। एक दिन दीप्ति का चुहल सूझल। ऊ दिनेश के फोन प बतावली – 'मुंबई के एगो नामी विज्ञापन कंपनी से हमरा ऑफर मिलल बा.... आजे रात के गाड़ी से जा रहल बानी...।'

'ना, तूं उहां मत जा...तूं उहां नइखू जा सकत... ई हमार आदेश बा। ओजा के कंपनी, सामान विज्ञापन में अंग–प्रदर्शन के प्राथमिकता देली सन।'

'पइसो त जादे देली सन। अंग–प्रर्दशन में हरज का बा ? पइसा बा त शरीर बा, फेर शरीर से जादे से जादे पइसा काहें ना उगाहल जाव। आखिर, ई शरीर त हमरे ह। एकर उपयोग काहें ना करीं ?'

'तोहार कइसे ह ? ऊ त तोहार माई–बाबूजी हमरा के दान क चुकल बाड़ें।'

'मगर, रउरा स्वीकार त नइखी कइले। एह से अभी एपर हमरे अधिकार बा, हम मुंबई जरूर जाइब। ई हमरा कैरियर के सवाल बा...।'

'भाड़ में जाव ओइसन कैरियर जवन नारी के नंगा करत होखे। लागत बा, तोहरा पश्चिमी सभ्यता के हवा लागि गइल बा। त जान ल, हमहूं बिगड़ैल घोड़ी के लगाम कसे जानिले...।' दीप्ति का लागल, दिनेश के भीतर के मरद नींद से जाग उठल बा। एगो पत्नी खातिर एह से बढ़के शुभ संकेत आउर का हो सकत बा ? ऊ कहली – 'ठीक बा जब रउरा कहत बानी त ना जाइब...।'

एगो टेढ़ मुस्कान उनका होंठन प रेंग गइल। ऊ बुदबुदइली – 'त, लगाम कसत काहें नइखन ? के मना कइले बा ?'

चुहलबाजी के एह घटना के कुछुवे दिन बाद, दिनेश के तबीयत अचानक खराब हो गइलि। सांझ के पांच बजे जब ऊ डेरा पहुंचले, ताती–सिहिरी होखे लागल। जब बोखार सम्हार से बाहर होखे लागल त फोन से दीप्ति के बोलवलें। ऊ जल्दी से तइयार होके उनका डेरा प पहुंचली। देखली, कमरा के दरवाजा खुलल बा, ऊ बड़बड़ा रहल बाड़ें, तेज बोखार बा... बदन कांप रहल बा। स्थिति नियंत्रण से बाहर बुझाइल। ऊ जल्दी से टेम्पूवाला के बोलवली आ उनका के ले जाके अस्पताल में भरती करवली। खून–जांच से पता चलल कि मलेरिया ह, तीन–चार दिन ठीक होखे में लागी। उनकर, ऊ रात, अस्पताले में बितलि। सुबह जब बोखार कम भइल त ऊ अपना दफ्तर में गइली आ पांच दिन के छुट्टी लेके फेर अस्पताल वापस लवट अइली।

चार बाद दिन जब अस्पताल से छुट्टी मिललि त ऊ उनका के डेरा लेके अइली, खाना बनवली, उनका के खियवली आ संगहीं अपनहूं खइली। सांझ खां जब दीप्ति हॉस्टल जाये लगली त दिनेश उनकर हाथ पकड़ लिहलें। कहलें – 'रूक जा दीप्ति। हमरा के अकेला छोड़ के मत

www.bhojpurisahityangan.com

जा। हम तोहार गुनहगार बानी, माफ क .द। आवेश में आके हम तोहरे ना, सृष्टिकर्तो के अपमान कइले बानी। संसार में जवन कुछ बा, शत प्रतिशत सही भा गलत नइखे। कवन वस्तु कइसन बा, ई देखेवाला के मनोवृति प निर्भर करेला। खोटा के त खोट नजर अइबे करी...। आज हमरा महसुस भइल बा, शादी ना खाली वंशवृद्धि के निमित्त स्त्री–पुरुष वासनात्मक प्रेम के सामाजिक स्वीकृति होले, भले ई जिनिगी के अधूरापन पूरा करे खातिर दू आत्मन के बीच कइल गइल अनुबंधो होले। नर–नारी एक दोसरा के पूरक होलें। दाम्पत्य जीवन के सफलता खातिर एक दोसरा के गुण–दोष के अपनावल बहुत जरूरी बा...। हमार अनुरोध स्वीकार कर...।'

'रउरा बातन के विश्वसनीयता प हमरा संदेह बा। दू–चार दिन के सेवा के बदला में एतना उपकृत होखे के जरूरत नइखे। ई सभ त हम दोस्ती के फर्ज निभावे खातिर कइनीं। आगहूं करबि। अपना निर्णय प अटल रहीं। हमरा के जाये दीं।'

'अगर चल गइलू त हम आपन जान...।' एकरा पहिले कि दिनेश कुछ आगे बोलस, दीप्ति उनका मुंह प आपन हथेली राख दिहली।

'अइसन करब त हमहूं...।' दीप्तियो आगे कुछ ना बोल पवली। दिनेशो के हथेली उनका मुंह प जा चिपकलि।

विवादी शब्दन के अंत हो गइल आ धीरे–धीरे होंठन के मूक भाषा आंखिन में समाये लागलि।

कार्तिक नगर, खड़ंगाझार, एस0 एस0
ऑटोमोटिम सर्विस सेंटर के पास,
टेल्को वर्क्स, जमशेदपुर – 831004
फोन – 0657–2288633

◆

कविता

मन जुड़ाइल रहे

❑ रघुनाथ प्रसाद

तन नहाइल रहे, मन जुड़ाइल रहे,
जाते–जाते इंजोरिया, पता दे गइल।

केश का छोर पर, घास का पोर पर,
बेल लत्तर कली, आ लगली पेड़ पर।
सगरी मोती के दाना टँकाइल रहे,
ढीठ पछेआ हवा, सब चोरा ले गइल।

ओठ पर फेफरी, हाड़ में थरथरी,
घाम सेंकेला, निकलल रहीं दू घरी।
माघ के घाम सुहरावे लागल बदन,
शीतलहरी बेदर्दी, दगा दे गइल।

ओकरा खऊरा घरे, ओकरा कीरा परो,
दीं ना गारी तऽ का ओके पूजा करीं।
एगो बसिअउरा रोटी चुहानी रहे,
उहो चोरी से कुक्कुर उठा ले गइल।

काहे लागी मुझौसा ई जाड़ा बनल,
बूढ़ लइकन का जिनगी प आफत परल।
पेट भरूआ ला तोषक रजाई, मिलल,
पेट जरूआ के लुगरी ओढ़ा के गइल।

एगो बोरसी रहल रोज तापत रहीं,
भूसा भर भर के, मउर से झाँपत रहीं।
जहिया छोटकी पतोहिया का लइका भइल,
का कहीं उहो छँवड़ा उठा ले गइल।

233, विजया हेरिटेज, अनिलसुर पथ,
उलियान, कदमा, जमशेदपुर
फोन – 2305706, 9430183351

◆

www.bhojpurisahityangan.com

ललित निबंध

आज के अकिला फुआ

❑ गिरिजाशंकर राय गिरिजेश

अकिला फुआ के नाँव लेत एगो अइसना मेहरारू के चेहरा आंख का सोझा घूम जाला जे गांव के सभकर नेही होखे। केहू के घर आनके ना लागे। छींटदार साड़ी, ओही से मैच करत ब्लाउज पहिरले, भर बाँह चूड़ी, लिलार पर चाकर टीका, भर मांग सेनुर, आंखि में काजर उनका व्यक्तित्व के कहानी कहेला। अगिला दूनो दाँतन पर बत्तीसी जड़ववले हईं। हंसेली त दाँत के सोना चमक उठेला। सामान्य कद–काठी के पक्का रंग, पानी नीयर सोभाव के अकिला फुआ के मरद छोड़ के काहें जोगी हो गइलीं, केहू ना जानल। फुआ ससुरा छोड़ के नइहर आ गइली। केहू पूछबो करे त ऊ एतने कहसू – हम का बताईं, जब कवनो बाते नइखे। रउरा ओकरा से पूछीं जे छोड़ के गइल बा। एकरा बाद फुआ से केहू ना कुछ पूछल। फुआ गाँव के जिनगी में अइसन घुल मिल गइली कि उनकर नइहर–ससुराल गाँवें हो गइल।

जिउतिया के कहानी सुने के होखे त फुआ बोलावल जासु। दीवाली का बाद दलिदर खेदे में फुआ परधान रहसु। गोधना कूटे के समय भाइं–बहिन के कहानी फुआ सुनावसु। गांव के मेहरारून के फुआ कलेण्डर रहली। कवन व्रत कब करे के बा फुआ बतावसु।

ओह दिन के बात सबका इयाद बा। गांव के मेहरारू मनतोखी का घरे बइठ के दुपहरिया में एने ओने के बात करसु स। केहू महंगाई के गरियावे त केहू सरकार के। अकिला फुआ बतवली कि एह तरे बइठ के एहर ओहर के बात कइला से कुछ ना होखी, कुछ काम करबू जा तब। रूपा भउजी कहली कि दू लइका के महतारी भइलीं कवन काम करब जा। घर के त काम करते बानी जा। अकिला फुआ दूसरा दिने चार गो चरखा मंगवा दिहली। साथे एगो मास्टर साहेब अइले चरखा चलावे के सिखा दिहले। इहो बतवलन कि ई सूत कहां बिकाई आ रूई कहां से मिली। चरखा चलवला के बात सभकरा समझ में आ गइल। रूपा भउजी अब कहेली घर के अधिकतर कपड़ा हम चरखा चला के पवले बानी। कई गो रजाई आ बेड सीट हम एह जाड़ा में तइयार क दिहली। आजो गांव के मेहरारू एकट्ठा होखेली स, सभ चरखो काते ली आ बातों कूचनो करत रहेली।

एही तरे पोलियो का टीका के बारे में कुछ अफवाह फइलल। अकिला फुआ सोझा आ गइली। सभकरा के बतवली कि ई अफवाह पर धेयान देबे के जरूरत नइखे। पोलिया के टीका लगा के लइकन के लंगड़पन रोकल जा सकेला। सरकार एके सेंत में लगावत बा, एकर लाभ लेबे के चाहीं। फुआ के बात से सभे एकमत होके लइकन के पोलियो ड्राप पियावे लागल।

दू–चार दिन ले एगो नया अफवाह गांव का मेहरारून में जनमलि बा। हर जगह से फोन आवता कि दामाद के भेजल साड़ी गंगा जी के चढ़ा के सास लोग पहिरे। फुआ एह कर विरोध कइली कि अइसना कुल्हि अफवाह से बचे के चाहीं। सभे आपन काम करो। फुआ के अनुशासन काम कइलस। एह अफवाह के पैर गांव में ना जम पवलस। गांव के मेहरारू अचम्भो खाली स कि बिना पढ़ल–लिखल फुआ में कहाँ से एतना बुद्धि ओवेला। फुआ कहेली आदमी के फल ओकरा

www.bhojpurisahityangan.com

करमन से मिलेला जे जइसन करी ओइसन पाई। सहसे सभकरा के अपना परिवार के सुखी बनावे के बात करे के चाहीं। एक दिन फुआ एगो लोककथा सुनवलीं।

एगो गांव में एगो फकीर भीख मांगत रहे। ऊ इहे कहे, 'जइसन करी ऊ ओइसन पाई, पूत भतार का आगा आई।' फकीर का एह कहला पर गांव के एगो मेहरारू के एतना कुरूचे कि कबो गोबर, कबो पानी, कबो जूठ ओह फकीर का कटोरा में डाल दे बाकिर ऊ फकीर गजब के रहे। कबो ना कुछ बोले। ऊ ओही तरे आवे गावे। मेहरारू बड़ा क्रोधित भइल। ऊ एक दिन जहर मिला के दूगो मोट लिट्टी पकवलसि आ फकीर का कटोरा में डाल दिहलस। संजोग के बात कि ओह दिन फकीर का कटोरा में अउरी अच्छा खाना मिलल। फकीर ओके लेके अपना झोपड़ी में गइल। दूनो लिट्टी ध दिहलस का काल्हू खायेब आ जवन खराब होखे वाला खाना रहे ओके खा लिहलस। फकीर गांव से दूर भयानक जंगल में झोपड़ी डाल के रहे। संजोग के बात रहे कि गांव के ओह गुसइल मेहरारू के मरद आ लइका परदेस में कमाये गइल रहे। ऊ लोग ओह दिन गांव लौटत रहे। गाड़ी विलम्ब से पहुंचल रहे। एह से जंगल में पहुंचत रात हो गइल। आगे जंगली जानवरन के बोली सुनात रहे। ऊ लोग ओक फकीर का कुटिया पर पहुंचल। फकीर दूनो जाना के बड़ा आवाभगत कइलस। दूनो जाना बड़ा भुखाइल रहलन। ऊ लोग खाये के मंगलन त फकीर धइल दूनो लिट्टी खाये के दे दिहलस। दूनो जाना खा के लोग सूतल त फेनु ना उठल। फकीर गांव में सनेस भेज दिहलस। चीन्हें खातिर सभे आइल। ऊ मेहरारू जब मरद आ लइका के मुअल देखलस त छाती पीट के रोवे लागल। हमार करनी हमरे घर उजाड़ दिहलस। फकीर साचों कहत रहल ह कि 'जइसन करे ऊ ओइसन पावे, पूत–भतार का आगा आवे।' फुआ के ई लोककथा के प्रभाव गांव का मेहरारून पर बहुते पड़ल रहे।

ओह दिन गांव में बात फइल गइल कि फूफा जी फुआ के विदा करावे आइल बाड़न। गांव भर के अचरज के ठेकान ना रहे कि पत्थल पर दूब कइसे जाम गइल। फूफा जी फुआ का सोझा हाथ जोर के कहत रहलन, तोहार कहल ठीक बा अकिला की कर्म पूजा ह। हम सन्यास लेले रहलीं ह, बाकिर चैन ना परल हा। तू जीत गइलू, हम हार गइली। हम तोहरे लियावे आइल बानी।

फुआ जब फूफा जी का साथे कार में बइठली त गांव भर के लोग के आंख में लोर रहे। कार धूल उड़ावत चल गइल। लोग तबले देखत रहे जबले कार आँख का ओझल ना हो गइल।

बी–10, पत्रकार हाउस, राप्ती नगर,
पो0 – आरोग्य मंदिर, गोरखपुर

◆

ग़ज़ल

❑ आसिफ रोहतासवी

सोरहे पार भइल बाड़न ऊ,
हाय! जनमार भइल बाड़न ऊ।
अइसहीं कम कटार ना रहलें,
आह! तलवार भइल बाड़न ऊ।
एक दिन आँख के रहन पुतरी,
फूल डुमरी के भइल बाड़न ऊ।
खून सातो मुआफ हो जाला,
दिलरुबा यार भइल बाड़न ऊ।
दिल चुरावल जे आजतक 'आसिफ',
खूब दिलदार भइल बाड़न ऊ।

◆

www.bhojpurisahityangan.com

आपन लोग

यायावर साहित्यकार : महेश्वराचार्य

❑ नागेन्द्र प्रसाद सिंह

महेश्वराचार्य अब ना रहलीं। 91 बरिस 6 महीना पूरा कर के 28 जून 2011 के साँझि खाँ उहाँ के स्वर्गसिधार गइनी। एह प्रदूषित पर्यावरण आ खान–पान के दौर में हम कुछे लोग के 90 के उम्र सीमा पार करत देखनीं जेमे डॉ0 विवेकी राय आ श्री नागेश्वर प्रसाद (पटना वि0 वि0 के पूर्व निबंधक) के बाद इहाँ के तिसरका हमार परिचित बानी। इहाँ के प्रणम्य बानी।

महेश्वराचार्य से पहले पहल 8वाँ दशक में भेंट पाण्डेय कपिल जी के घरे भइल रहे। जब उहाँ के कुछो लिखे में व्यस्त रहीं। बाद में गोष्ठियन में महेश्वराचार्य जी के आलेख सुने के मिलल।

महेश्वराचार्य जी के वास्तविक नाम महेश्वर प्रसाद रहे जेकरा के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कर्ता–धर्ता श्री पाण्डेय कपिल आ भैरवनाथ पाण्डेय 'महेश्वराचार्य' बनवलें। अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के प्रबंधकाव्य 'कौशिकायन' हमरे प्रेस (जयदुर्गा प्रेस, नया टोला, पटना–4) में मुद्रित होत रहे। ओकरा आखिर में लेखक आपन जीवनी काव्यरूप में लिखले रहलें जेकर कुछ पंक्ति आजो हमरा स्मृति–पटल पर अंकित बा –

पहिले पहिल भरौली गइलीं,
मात महेसर जी के खइलीं
उनका भिरी बतुस जे पवलीं,
आँखि फारि के निरिख लगवलीं
लोकगीत के बड़हन मरमी।
लिखसु निबंध सनातन धरमी।
गीता–प्रेस से रहे रहनट।
यू0 पी0 में बान्हल जिनकर ठह।

महेश्वर प्रसाद के लगे भोजपुरी लोकगीतन के अच्छा संग्रह रहे, साथहिं भिखारी ठाकुर के समूचे रचना उनका लगे रहे। उहाँ के भिखारी ठाकुर प कई गो परिचयात्मक निबंध लिखली जे रघुवंश नारायण सिंह द्वारा संपादित 'भोजपुरी' में आ पांडेय नर्मदेश्वर सहाय संपादित 'अंजोर' में प्रकाशित भइल रहे। बाद में उहाँ के जनकवि भिखारी ठाकुर नाँव से हिन्दी में एगो किताब लिखलीं जे 'अंजोर' के संपादक पाण्डेय नर्मदेश्वर जी प्रकाशित करवलीं। बाद में ओकरे से मिलत जुलत पुस्तक 'भिखारी' नाँव से हमरे प्रेस (जयदुर्गा प्रेस) से मुद्रित भइल। एह क्रम में महेश्वराचार्य अधिकतर हमारे प्रेस में निवास करत रहीं। एही क्रम में हमनी में निकटता बढ़ल। उहाँ के हमरा से काफी वरीय रहीं। उनका भाषा बहुते विवरणात्मक होत रहे। एह से ओकरा में अध्याय के शुरू आ आखिर में कुछ बदलाव करे के पड़ल। एह सब से उहाँ के बहुते खुश होत रहीं।

महेश्वराचार्य वास्तव में आचार्य रहीं काहें कि उहाँ के हर विषय प लिखत रहीं। उहाँ के भाववादी आलोचना पद्धति के आचार्य रहीं। उहाँ के हर रचना में अच्छाइये नजर आवत रहे। दोष खोजल उनकर सुभाव में ना रहे। उहाँ के रचना पढ़ के खूब खुश होखीं आ प्रशंसा के पुल बान्हीं। सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी (अध्यक्ष, भो0 अकादमी) लिखित 'सत्य हरिशचन्द्र (प्रबंधकाव्य) आ कुंजबिहारी कुंजन जी के रचना 'सीता के लाल' पर समीक्षा पुस्तक लिखलीं। भोजपुरी में भाववादी आलोचना के तीन गो ग्रंथ उहाँ के लिखली – भिखारी, सीता के

www.bhojpurisahityangan.com

लाल आ सत्य हरिशचन्द्र आजो मानक पुस्तक बाड़ी स। पाण्डेय कपिल के उपन्यास 'फुलसुंघी', पाण्डेय सुरेन्द्र आ पाण्डेय चन्द्रविनोद के कई गो कहानियन आ कवितन प इनकर आलेख पठनीय बा।

महेश्वराचार्य मूलरूप से पत्रकार रहीं। उहाँ के सन् 1935 से मृत्यु के कुछ दिन पूर्व ले लेखन, संपादन आ विचारण करत रहलीं। पिछिला कुछेक बरिस से शिथिलता आ रूग्नावस्था आ गइल रहे। उनकर लिखल 'बासी फूल' निबंध संग्रह भी प्रकाशित भइल। उहाँ के 'तिलंगा' कविता संग्रह लिखलीं। कुछ दार्शनिक निबंध, कुछ कहानी आदि लिखलीं जे यत्र–तत्र प्रकाशित भइल। जब ले उनका संपूर्ण साहित्य के आकलन आ अध्ययन नइखे हो जात, तब ले महेश्वराचार्य के संपूर्ण लेखकीय कृतित्व प चर्चा अधूरे रह जाई।

महेश्वराचार्य अपना सहयात्री साहित्यकारन के प्रति बहुते संवेदनशील रहलें। रामनाथ पाठक 'प्रणयी', जितराम पाठक, रामेश्वरनाथ तिवारी जइसन साहित्यकारन के स्मृति–ग्रंथन के निष्ठापूर्वक संपादन कइली। 'दियरी' पत्रिका के संपादन कइनी। इहाँ के लखनऊ के भूतनाथ बाबा के शिष्य भइनी आ आध्यात्मिक यात्रा भी कइनी। इहाँ के शक्ति आराधना करत रहीं बाकी दिखावा तनिको ना कईनी। इहाँ के बहुते मित्र आ प्रशंसक रहले। इनकर मुख्य कार्यक्षेत्र बिहार, यू0 पी0 आ कोलकाता रहे। यायावर जीवन के साथी एगो झोला रहे, जेमें एकाध गो धोती–कुर्ता, पूजा के किताब आ सद्यः प्रकाशित भोजपुरी के किताब रहत रहे जे उहाँ के उपहार में मिलत रहे। बहुते विनम्र आ सादगीमय व्यक्ति रहीं महेश्वराचार्य। विचार से दृढ़, अल्पाहारी आ स्वच्छ आदत के स्वामी। कवनो परिवार में आसानी से समंजसित हो जाये वाला सुभाव। घर के बहु–बेटी उनकर सेवा सत्कार में रूचि लेत रहे लोग। 1985 ले एकदम स्वस्थ रहीं महेश्वराचार्य। बाद में अंतिम काल उनकर जन्मभूमि भरौली गाँव में पोता के संरक्षण में बीतल। खेद होला कि महेश्राचार्य के जीवन काल में उनकर साहित्यिक कृतियन के संग्रहित ना कइल जा सकल। अबो ई काम हो जाए त अच्छा होई।

संतुलित दिनचर्या, साधनापूर्ण जीवन, मित्र मंडली, आस्था, पूजा अर्चना आ लेखन–पठन के स्वस्थ आदतन के द्वारा दीर्घायु होना संभव बा – महेश्वराचार्य एकर प्रमाण रहीं। उहाँ के सचहूँ मोक्ष प्राप्त कइनीं। इहाँ के कवनो राजनीतिक विचार धारा भा खेमा में ना गइनी। कवनो आन्दोलन (आरक्षणादि) के समर्थन भा विरोध ना कइनी। उहाँ के आपन योग्यता, क्षमता, साधना आ संबंधन प बहुते धेयान राखत रहीं।

आजो जब–जब इहाँ के इयाद परेला मन भारी हो जाला। अइसन लागेला कि एगो यायावर साहित्यकार चुपके से गुजर गइल। काश कवनो साहित्यकार भा साहित्यिक संस्था उनकर प्रकाशित अप्रकाशित समस्त रचनन के संकलन–संपादन कर के समाज के सामने रखित। महेश्वराचार्य के हमार शत–शत प्रणाम आ कोटिशः श्रद्धांजलि।

जी–1, शेफाली अपार्टमेन्ट, दिनकर गोलम्बर, राजेन्द्र नगर, पटना–4, मो0 - 9304507992 ◆

भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति के दियना जगावत 'अंगना' पत्रिका के पूरे परिवार के हृदय से बधाई आ आगे बढ़े के शुभकामना

सुनील कुमार सिंह

संयोजक : रक्तदान (HVTL)
प्रतिनिधि : HVTL कर्मचारी यूनियन
कोषाध्यक्ष : जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्
प्रतिनिधि : भारतीय भोजपुरी संघ

www.bhojpurisahityangan.com

लोककथा

छत्री गुलगुलिया

(प्रस्तुत लोककथा श्रीमती सुशीला पाण्डेय द्वारा रचित भोजपुरी लोककथा संग्रह 'बेलवन्ती रानी' से साभार लीहल गइल बा)

❑ सुशीला पाण्डेय

एगो राजा रहन। उनका सात गो बेटा आ एगो बेटी रहे। राजा सब बेटा–बेटी के बियाह कर देलन। बेटी के बियाह बहुत बड़ राजा से कइलन।

जब राजा मर गइलन त बेटा लोग के मन में पाप जागल। ऊ लोग सोचल कि बहनोई के मार के उनकर राज ले लीं। ई सोच के ऊ लोग बहनोई के खाना पर बोलावल, आ खाना में जहर देके मार देल।

जब ऊ मर गइलन तब उनकर घोड़ी के कोई छू ना सकल। ऊ केहू के लगे जाहीं ना दे। ओकरा के लग्गी से घास वो ऊपर से पानी दे दियाय।

बहिन के घर से निकाल दिहल लोग। ऊ बेचारी एगो मड़ई लगा के रहे लगली। कुटिया–पिसिया कर के दिन काटे लगली। राजा मरलन त उनका पेट में लड़िका रहे। उनका ओही मड़ई में बेटा भइल। बेटा के नाँव छत्री गुलगुलिया रखली।

छत्री गुलगुलिया जब कुछ बड़ भइल त लड़िकन में खेले जाये लागल। सब लड़िका सब कह सन कि हम दूध पियली हँ, घीव खइलीं हँ। त ऊ घरे आके मतारी से कहे कि हमरा के दूध द, घीव द। त मतारी दूध का बदला चउरठ घोर के दे देस, आ घीव का बदला माँड़ के छाल्ही दे देस। छत्री गुलगुलिया खा पी के खुश हो जाय।

अब सब लड़िका ओकरा के चिढ़ाव स कि चउरठ घोर क पियेल आ माँड़ के छाल्ही खाल त कहेल कि दूध पियलीं हँ, घीव खइलीं हँ। ई बाप के किरिया खाये लागे कि 'बाप किरिये।' त सब लड़िका सब कहे लगलन कि 'बाप के ठेकाने नइखे, बाकिर 'बाप किरिये, बाप किरिये, कह–कह के बाप के किरिया खइले बाड़न।'

तब ई आके मतारी से कहलस कि –

"बाबा के नमवाँ अम्मा जल्दी बताव
ना त मारबि तलवार हो।"

पहिले मतारी नाँव ना बतावत रही, बाकिर जब ई बहुत जिद कइलस त ऊ सब बात बता देली। तब ई कहलस कि हम आपन राज त लेबे करेब, जा तानी मामा से माँगे।

एतना कहके छत्री गुलगुलिया ममहर अइलस। मामा लोग के प्रणाम कइलस आ बइठ गइल। अब त मामा लोग एकरो जान मारे के सोचे लागल कि एकर जान मार दियाव। एकरा खाना में जहर डाल देल लोग। बाकिर छोटकी मामी एकरा के बहुत मानत रही। ऊ एकरा के बोला के कहली कि 'जे थरिया तोहरा आगा रखाय ऊ मत खइह। अपना छोटका मामा के थरिया में बइठ क थोड़े बहुत खाके उठ जइह। आ ऊ घोड़ी मांग लिह। आ अपना महल में जाके रहे लगिह।'

छत्री गुलगुलिया उहे कइलस। छोटका मामा में तनी–मनी खाके उठ गइल, आ कहलस कि 'हम ऊ घोड़ी लेब।'

मामा लोग कहल कि 'जब से हमार बहनोई मरलन तब से ऊ घोड़ी केहू के लगे जाहीं ना देवे। ओकरा के लग्गी से घास वो ऊपर से पानी दियाला। ई घोड़ी तूँ कइसे लेब ?"

www.bhojpurisahityangan.com

छत्री गुलगुलिया कहलस कि "हम जा तानी देखे कि घोड़ी का कर तिया।" एतना कह के ऊ घोड़ी का लगे चल गइल आ ओकरा के खोल के ओकरा पीठ पर बइठ गइल आ अपना घरे ओही घोड़ी पर चढ़ल चल आइल। आके, अपना मतारी के लिया के महल में चल गइल, आ मतारी साथे महल में रहे लागल। अब छत्री गुलगुलिया आपन बियाह एगो राजा के लड़की से कइलस।

एक दिन छत्री गुलगुलिया के मेहरारू तालाब में नहात रहे। ओह तालाब पर सातो मामी नहाये आइल लोग। मामी लोग इनका मेहरारू से पूछल कि –

"केकर हऊ तुहूँ धीया पतोहिया हो,
केकर हऊ तुहूँ नारी हो।"

त ई कहली कि –

"राजा के हईं हम धीया–पतोहिया हो
छत्री गुलगुलिया से बियाह जी।"

आ घरे आके कहली कि 'सात गो रानी नहात रहे लोग त हमरा से अइसे–अइसे पूछल लोग त हम अइसे–अइसे कहली हँ।' त छत्री गुलगुलिया कहलस कि ऊ लोग हमार मामी लोग रहे।

एक दिन छत्री गुलगुलिया ओह तालाब पर मछरी मारे लागल। तब मामा लोग कहल कि तूँ काहे बिना हमनी से पूछले मछरी मरल ह ? त ई कहलस कि 'एमे का बा ? समूचा मछरी तूँ लोग ले ल, आ मूड़ा काट–काट के हमरा के दे द।' मामा लोग खुश हो गइल कि भले हमनी के सब मछरी दे देलन, खाली अपने मूड़िए नू लेलन हँ। सब मछरी लेके ऊ लोग घरे गइलन त रानी लोग कहे लागल कि –

'राजा खाये सिरा, गुलाम खाय पोंछी।'

अब ई लोग खीस में आ गइलन आ खीस में पड़के ओकरा पर चढ़ाई कर देलन। एह लोग का साथे बहुत–सा फौज रहे, आ ऊ बेचारा अकेले रहे। ऊ घबड़ा गइल, बाकिर दोसर उपाये का रहे ? छत्री गुलगुलिया घोड़ी पर सवार हो गइल आ घोड़ी से कहलस कि –

"अबकी रइनियाँ ए घोड़िया पार लगइबे त
सोनवें मढ़इवों तोरे टाप जी।'

त घोड़िया कहलस कि –

"तुहूँ त लड़ बेटा ढाल–तलुअरिया
हमहूँ लड़िब टापे–दाँत जी।"

आ लागल घोड़ी लोग के टाप आ दाँत से मारे–काटे।

अब राजा लोग पीछे हटे लागल। हटत–हटत अपना महल में लुकाए लागल लोग। ई खदेड़त चल गइल। जब उहाँ पहुँचल त घबड़ाइल कि कइसे छरदीवाली फानीं, चाहे फाटक तूड़ीं। त फेर घोड़िया से कहलस कि –

"अबकी रइनिया ए घोड़िया पार लगइबे त
सोनवें मढ़इवों तोरे टाप जी।"

त घोड़िया कहलस कि –

"तूहूँ त लड़ बेटा ढाल–तलुअरिया
हमहूँ लड़बि टापे–दाँत जी।"

आ लागल घोड़ी टाप से छरदीवाली आ फाटक तूड़े।

छत्री गुलगुलिया फाटक तूड़ के भीतर ढुक गइल, आ सब लोग के मार दिहलस। खाली छोटका मामा बाँचल रहले। उनका के छोटकी मामी अपना घर में लुका देली, आ छत्री गुलगुलिया का लगे आके रो–रो के कहे लगली कि 'हम कबहीं तोहार बुराई ना कइलीं, तूँ अपना छोटका मामा के छोड़ द।'

त छत्री गुलगुलिया कहलस कि "तूँ ना

www.bhojpurisahityangan.com

कइलू, बाकिर छोटका मामा त हमरा के मारे के चहबे कइले! एह से उनका के कुछ सजाय त चहबे करी। तूँ उनका के बाहर निकाल। हम वादा करत बानी कि उनकर जान ना मारब।"

तब ऊ उनका के निकाल के अइली। छत्री गुलगुलिया अपना तलवार से उनका दहिना हाथ के अंगूठा काट देलन।

अब छत्री गुलगुलिया इहँई अपना मतारी आ मेहरारू के ले अइलन आ राज करे लगलन। छोटका मामा आ छोटकी मामी के मामा–मामी के जगहा रखलन, आ बाकी छवो मामी के दाई बनाके रखलन।

◆

ग़ज़ल

❑ राम यश 'अविकल'

छुट्टी लेके आजा संइया, घर में इंतजार बा।
तोहरा के देखे खातिर, जिअरा बेकरार बा।।

छोड़ऽ मोह डालर, पौंड, दिनार रूबल के संइया।
करे खातिर आपन गंउवे में, ढेर रोजगार बा।।

कवले अइहें पापाजी, रोज मुनिया पूछेलें।
तोहरे नेह-छोह प्यार के, ओकरा दरकार बा।।

माई के बेमारी लागल, धइलें बाड़ी खाटी।
बोली-चाली बंद भइल, बहत असुअन के धार बा।।

बाबूजी के नैना तोहरे, आस में पथराइल बा।
रहिया निहारत तोहार, घर के सारा परिवार बा।।

कतना ले सम्हारी घर के, भारी जिम्मेवारी बा।
एगो दूगो दुख नइखे, घेरले कुफूत हजार बा।।

पकड़ी गैस एजेंसी के दक्षिण
पो० – पकड़ी, आरा,
जिला – भोजपुर (बिहार), 802301

◆

लोकगीत

जोग टोना

❑ प्रस्तुति : बबीता रौशन

जोग मांगे चलली बेटी अम्मा जी के टोला
अम्मा दीहीं ना सुहाग, नैहर वाली के सुहाग
बाबा प्यारी के सुहाग...

अरे माई मैं ना जानिला जोग कइसन होखेला
बेला चमेला होखेला, चंपा कलियाँ होखेला
डाला मड़ुआ होखेला अरे माई...

जोग मांगे चलली बेटी चाची जी के टोला
चाची दीहीं ना सुहाग, नैहर वाली के सुहाग
बाबा प्यारी के सुहाग...

(एही तरे सभ रिश्ता के लगा के गावल जाई)

दूरभाष – 0657–2346123 ◆

काकी कहली ह –

एक चम्मच मधु में 75 कैलोरी ऊर्जा होला

❑ के० पद्मा

मधु (शहद) के उपयोग –

1. शरीर के कटल घाव से खून बहत होखे त उहवाँ मधु लेप के पट्टी बान्ह दीं।
2. शहद के साथे नींबू मिला के बाल में लगइला से बाल झड़ल बंद हो जाला।
3. सबेरे–सबेरे नींबू आ शहद पानी में मिला के पीयला से रक्तचाप में मदद मिलेला।
4. सबेरे–सबेरे गर्म पानी में शहद मिला के पीयला से मोटापा घटावे में मदद मिलेला।
5. तुलसी, गोलकी (काली मिर्च) के चाय में शहद मिला के पीयला से बुखार दूर होला, खासी, जुकाम में भी राहत मिलेला।

www.bhojpurisahityangan.com

लघुकथा

गंगाजल

❑ सुरेन्द्र प्रसाद गिरि

होत सबेरे भउजी के फोन मिलल, 'बाबूजी तीसरका बेर लकवा के चपेट में आ गइल बानी' साथे सुरसती चाची के भी कंपात आवाज आइल, 'जल्दी आजा बेटी, शायद तोहार बाबूजी अब ना बचिहें।'

खबर सुनते हमारे करेजा कांप गइल, अइसन लागल कि शरीर में के खून जमत जा रहल बा।

हम जल्दी से गाड़ी में बईठ गईनी। ट्रेन में पूरे चार घंटा के यात्रा रहे। एही गाड़ी से जुड़ल बचपन के एगो घटना इयाद आवत बा। बाबूजी हमरा आ भइया के लेके ट्रेन से कौनो मेला देखावे जात रहीं। हम आपातकालीन खिड़की से निहार–निहार बाहर के दृश्य देखत रहीं, तब ले अचानक हमरा देह के संतुलन बिगड़ल आ अब नीचा गिरिए जइती कि लगही के एगो मोसाफिर हमार बांह पकड़ लिहलन। पूरा डिब्बा में हल्ला हो गइल आ बाबूजी हमरा के मारे–पीटे के त दूर, अपना करेजा से लगा लिहनी। अपना स्वर्गवासी माई के अंतिम निशानी जे रहली हम। भइया त गाड़ीए में जार–बेजार रोए लगलन। तब से बाबूजी हमरा के हरदम पासे में रखें लगनी।

'तू आ गइलू बेटी ?'

घर में गोड़ राखते बाबूजी हमर पदचाप पहचान गइनी। उनका पर हमार नजर परल – धंसल आंख, बिखरल बाल, जर्जर काया, जइसे अब चिरई पिंजड़ा से उड़ जाये के चाहत बा। ना जाने कब हम बाबूजी के देह पर गिर गइनी आ बुका फाड़ के रोए लगनी। गांव भर के लोग अंगना में जमा हो गइलें। सुरसती चाची अंचरा से हमार लोर पोछे लगली। स्थिति कुछ सामान्य भइल त हम भउजी से पूछ दिहनी, 'बाबूजी के दवा–बीरो नइखे चलत का ?'

शायद हमरा बात से भउजी के ठेस पहुंच गइल, तबे त खिसिआइले कहली, 'बबुनी के करत बा सब देह–नाता आ दवा–दारू ? डॉक्टरो मना कर दिहले बाड़न कि अब कुछो ना हो सकत बा।'

चाचीजी हमरा के आंख मार के इशारा कर दिहलिन कि आगे हम कुछो ना पूछीं। अचानक बाबूजी के दारूण, अस्पष्ट आवाज सुनाई परल, 'बेटी तनिक गंगा–जल।'

शायद चाचीजी बाबूजी के अंतिम इच्छा समझ गइलिन। हम कुछ समझती एकरा पहिले चाचीजी हमर बांह झटक के कहलिन, 'जा बेटी, तोहार चाचाजी के हरिद्वार से ले आवल गंगाजल के शीशी ले आव, जल्दी कर, पेटी में रखल बा, दउर के जा...।'

हमरा जिनगी के ई कइसन दुर्दिन रहे। हम चाचीजी के हर आज्ञा यन्त्रवत् मानत गइनी। हम कौनो पंडित–ज्ञानी से सुनले रहली ई भयावह आ त्रासदीपूर्ण बात कि मउअत के एकदम नजदीक पहुंचल आदमी के मुंह में गंगाजल टपकावते शरीर से मुक्ति मिल जाला।

कांपत हाथ से गंगाजल टपकावत हमरा लोर से बाबूजी के चेहरा भींज गइल। जिनगी के अंतिम क्षण में बाबूजी अपना आंख का गड़ही से गांव भर के उपस्थित लोग के ओरिया ताक लिहनी। हमरा से अब अउर ना अड़ाइल – लोर

www.bhojpurisahityangan.com

के बांध टूट गइल। हम बाबूजी के बेजान देह पर गिर पड़नी। पवित्र गंगाजल टपका के हम बाबूजी के मृत्यु के कारण बननी कि एगो बेटी बनके उनका पितृऋण से मुक्ति पवली – एह बात के जबाब देवे से पहिले ही बाबूजी एह नश्वर शरीर के छोड़ के अनन्त में विलीन हो गइल रहीं।

ग्राम+पो0 – पिप्राढ़ी–4, जिला – बारा,
नेपाल, भाया– रक्सौल–845305
पूर्वी चम्पारण, बिहार
मो0 - 09472093341◆

लोकगीत

विवाह गीत

❑ अनीता पाण्डेय

हटिया के सेनुरा मंहग भइले बाबा,
चुनरी भइल अनमोल।
एहिरे सेनुरवा के कारन बाबा,
छोड़लो 'मैं' देश तोहार।
खखन खखन बेटी दुधवा पियवलीं
दहिया खियवनीं साढ़ीदार,
एको तू नेकिया न मानेलू बेटी,
चलेलू सुंदर वर साथ।
जानत रहल बाबा, बेटी जइहें पर-घर,
नाहक कइल मोर दुलार।
बाबा जे दिहले नौ मन सोनवां,
अम्मा जे लहंगा-पटोर
भइया जे दिहलें चढ़न को छोड़वा,
भउजी महुरिया के गाछ।
बाबा के सोनवां हम नौ दिन खइबों,
फटि जईहें लहंगा-पटोर,
भइया के घोड़वा हम नगर कुदइबों,
भउजी के अपजस होय।

बी/31/27, कैलाश भवन,
लंका, वाराणसी ◆

अंजोरिया झुटपुटाइल बा

❑ डॉ० सन्ध्या सिन्हा

अंजोरिया कुछ जरूरे अब झुटपुटाइल बा।
मुनिया के भइला प पेड़ा आज बँटाइल बा।।
गाँव में रोअत रहे जे बालिका इस्कूल।
आज उहवाँ फुदेना चोरी के लहराइल बा।।
रहन जे कुरसी प बइठ के तरवा चटवावत।
उनका दुआर ले चल के आज शामत आइल बा।।
अंड़चत रहन घमंडे जे बाप के धन प बेटा।
बेटियन के शोहरत से मन उनकर झँवाइल बा।।
गाय अस धिया खूँटा से जे बन्हात रहली।
जागे-जीये के अधिकार उनको अब दियाइल बा।।
धूरि पड़ गइल रहे जेकरा नामपट्टी पर।
ऊहे ईमानदार के पता आज पूछाइल बा।।
प्यार आ दुलार से बहुते भइल मनुहार।
मनलें ह ना, त बयना-धमकी के अब पेठाइल बा।।
चिरईं-रूखी-तितली खोजे आज ठौर ठिकाना।
शहर के चितफट चाल से, के ना उजबुजाइल बा।।

व्याख्याता, शिक्षा संकाय,
करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर
मो0 – 9835345653

◆

जिनगी में सब कुछ क्षण भंगूर होला। यदि सब अच्छा चलता त एकर भरपूर आनन्द उठाईं – ई हमेसे ना रही। यदि कुछ अच्छा नइखे चलत त दुःखी मत होईं – ई हमेसे ना रही।

x x x

जब ईश्वर राउर कवनो समस्या के समाधान कर देले त उनकर बल में राउर विश्वास बढ़ जाला। ईश्वर जब राउर समस्या के समाधान ना करेले त राउर बल में उनकर विश्वास बढ़ जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

व्यंग्य

सुपनेखा के पाती

❑ ब्रज मोहन राय देहाती

सोसती श्री पाती लिखी भारत के धरती से कुमारी सुपनेखा की ओर से कैलासे बिराजत आदरणीया 'पारबति' फुआ के रोज–रोज के भेट अंकवार। रउवाँ ओहिजा भांग पीस के फुफा जी के पीअवला से फुरूसत मिलते हमार चिट्ठी पढ़ि लेबि। एहिजा हिन्दुस्तानी धरती पर सभ लटत–बूड़त ठीक चलता। एति घरी हमहूँ धसोरा–धसोरी क के महिला पार्टी के अध्यक्षा बनि गइल बानी। धक्का–धुक्की से पद हथिया लेहला का बाद तरेगन गिनतानी। हरदम दूसर का कान्हे बनूक रखि गोली दागे के आदतन, अब ओहदा संभालते सेंगरा भारी होखत जाता। बरोबरे कवनो (एगो) अझुरा लागले रहता। गंगू बाई के रोवल, मंजू महरिन के हिचकी, अएनाको के कलपत चेहरा आ अस्पताल, कार्यालयन्ह में काम करत नारी दोहन (शोषन) यौन उत्पीड़न से जूझत मेहरारून के दुख सुनि मन भरि के पोरसन कूदे लागता। घिन से बजबजात अन्तर्मन उजबुजाए लागता। कबो मन करता – "नारी जात के दुर्गति पर एकनिये संगे बइठि के हमहूँ रोईं।" फिर मने आवता – रोवे वाली के मुंहे नोचि लीं आ कही दी – "हाले में यौन उत्पीड़न विधेयक बड़की लोगिन खातिन पास भइल ह। एह में गरीब–अनपढ़ पर केहू सोचलहूँ नइखे। सोचले रहित त चरचा ना भइल रहित। चरचा होखो कइसे ? करबू नौकरी आ खोजबू गरीबन के सुरक्षा विधेयक। बाड़ा छछलोल बाड़ू हो। जानत नइखू – विधेयक देस के प्रतिनिधि बनावेले। गरीबन के ना। के पूछेला अनपढ़ आ अवकातहीन लोगन के। केकरा सवांस बा तोहरा खातिन सोचे के ? अगुवा आगे के, आ आगेवाला के सोचेला। बकिए लोग बनले बा डंहकत–कफुरत रहे खातिन। जेके भगवाने रकटत–भिनिकत रहे लागि भेजले बाड़े ओके खंदान–दरखंदान सतावल सांसत भोगही पड़ी। भोगहीं के चाहीं।

हे, परबतो फुआ, हियरा दरके लागता लछिमी बाई के दरद से। आज हम बाजार से तरकारी खरीद घर के राह लपकले चलि आवत रहली, तले राह में हमे बिलमाय आपन अरज सुनावे लगली ह लछमानो। गोरे–गोरे गाल पर गोल–गोल अंखियन से टपकल मोती लोर पोंछत ऊ कहे शुरू कइली – "ए सुपनेखा बहिनी, तीन साल हो गइल पाटिल घर काम करत। उनका घर के मलकिनी उनकर मेहरारू घर भर के मुट्ठी में राखेले। पाटिल त गऊ हवे। जे मउगी कहे उहे ठीक। बाकी मलकिनिया एकनंबरी करमकिट हवे। हमसे काम के हिसाब लेत ओकर पेट ना भरेला, आ हमार हाल – "हर से छुट्टी हेंगा में नाधाईं। आधा पेंट खाईं, दिन भर खटीं। एह महीना के दरमाहा ओह महीने मिल गइले भाग मनाईं। ना त तीसरका के आस पर हाड़ ठेठाईं। दू माह बादो पगार देत कंहरत रहेले। भोर से सांझ तक खटला का बादो ओकर आंख मटकावल सहे पड़ता।"

कोइलरिया छनकल रहेले जी। हम काम में बाझल रहिले आ ऊ पाटिल पर पहरा लगवले रहेले। बिना बेजाय के अछरंग। बेगर खदी बदी के बदनामी। भगवान हमें रूप दहले बानी, एह में हमार का दोष बा। हम भारत सरकार के गरमजरूवा जमीन ना हईं। तबो पपिनिया गरिआवते रहेले। कबो मन करता – "ओकरा किहां कामे कइल छोड़ दीं। फिर सोचिले – काहाँ जाइब।

www.bhojpurisahityangan.com

जाइब त का पाइब ? एहिजा मेहरारू के खोभसन दूसर जगह मरदन के उदबेग। देवघर गइले दूना दुख।"

"ठीक कहतानी हे लछमानो दीदी। राउरो हाल हमरे लेखा हो जाई।" कहत उनके पीछे खाड़ सबितरी महरिन आ गइली हमरी सोझा आ खोलि देहली अपना दरद के गठरी – "ये सुपनेखा दीदी – हमार लाज तुहीं बचाव। सांप–छुछुनर के हाल झेलतानी। बड़ी रकटना से साहू किहां काम मिलला का बाद जबले उनकर बेटवा अंखफोर ना भइल रहे सभ ओर शांति रहल। सरेख होते ऊहरेहि के जोगाड़ भीरावत रहता। ओकरी संग आवत–जात नवहिओ छेड़खानी करत हिचिकत नइखन। ओकनी के मनसोखई से तंग आके कतुने बार साहू–सहुआइन से इशारा कइलीं। बाकी के सूनेला धरम के कथा। उहो चुप्पी साध लेत बाड़े। चिरईं के जान जाय लइका के खेलवना। उलटे आपन बेइज्जती मान मुंह फुला लेत बाड़े। थाना–पुलिस जाए के हिआवे नइखे। उहां सबूत मंगले का देहब। दुरदुरा देहल जाइब। अनघा रूप या पइसा रहले बेगर सबूतो काम चलि जाइत। छेड़खानी कइसे साबित कइल जाई। सभ कुछ रहलो पर वकीलन्ह के जिरह हावा कर देला मेहरारून के। गरीबन का केहू गवाहो ना मिले। जेकरा पेट भरे के सवांस नइखे उनका न्याय दरबार के लमहर डगर पार करत गोड़ थउसि आ चिरउरी करत हाथ थाकि जाले।

"हम तीन–चार घरन्ह में काम पकड़लीं आ छोड़लीं। कहीं घर के मालिक, कतो मालिक के बेटा, नोकर चाहे संग में काम करेवाला मरदन के जमात लार टपकावत, दांत चिहारत। कतुना सबूत जुटइहें सबितरा। केकरा बउसाय का भरोसे। नदी के बहंतू पानी, अवकातहीन नारी। जवनका का संगे बूढ़वो मुंहे कारिख पोति समाज पर एहसान लादे खातिन तइयार।"

"हमरा कपारही पड़ल बा हो दीदी।" कहत अएनाको सिसिके लागत बाड़ी – "जबाना के रंग से मुड़ी गड़ा जाता। साठ साल के बूढ़ 'परीखाना' नातिन का उमिर वाली नोकरानी पर डीठ लगा आपन स्वर्ग सुधारल चाहता। अपना कफन के फिकिर छोड़ हमें साड़ी के सरकवांसी (जाल) में अझुरावे के फंदा फेकत रहता। तनिका भर ओकर मेहरिया का एने–ओने होते, हमे काम में मदत करे आ जाला। ओकरी घरे काज करत 'माईजी' के गोहरावत रहिले।"

फिर आ गइल ममिला रउवां कपारे हे फुआ। एक ओर गरीबी के शीतलहरी पर बेशुमार दौलत के दहकत पछुवाई दंवक। संगे मजबूरी के पाँव तले कचटि मनमानी पर उतारू मनसोख मदांध मनई, कवनो तरह के कानून पर कब्जा करे खातिन तत्पर। दूसर ओर जीवन जीये के असफल प्रयास। प्रजातांत्रिक देश में प्रजातंत्र के मुंह चिढ़ावत, अनपढ़–गरीबन के असहाय दरद से बेखबर विधेयक। नारी समस्या पर महटिआवन रूख। अब रउवें धरम बचाईं। चाहे कालिका रूप धरती पर आईं।

राउरे

कुमारी सुपनेखा

159/2/1, छोटा गोविन्दपुर,
जमशेदपुर – 15, मो० – 9386072965

◆

अंक पावती के सूचना देबे के कष्ट करीं सभे ताकि पत्रिका सही पता प चहुँप रहल बा एकर निश्चिन्ती हो सके।

– प्रबन्ध संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

स्वास्थ्य के सुगबुग

एड्स एगो खतरनाक लाइलाज बीमारी

❑ डॉ० आशा गुप्ता

एड्स एगो बीमारी ह जेकर पूरा नाम इम्यूनो डेफिसियेन्सी सिन्ड्रोम (Immune Deficiency Syndrome) होला। ई रोग एच0 आई0 वी0 (HIV) नाँव के वायरस (विषाणु) के द्वारा फइलेला। एच0 आई0 वी0 संक्रमण के अंतिम स्थिति के 'एड्स' कहल जाला। एक बेर संक्रमण भइला के कुछ बरिस के बाद ई वायरस शरीर के रोग–संक्रमण से लड़े के बचाव प्रक्रिया के क्षमता के नष्ट क देला। बहुते दुख के बात बा आज ले एह बीमारी के रोकथाम खातिर वैक्सिन के आविष्कार नइखे हो सकल। हँ एन्ट्री–रेट्रो वायरल (Anti-Retro Viral) दवाई से जिनगी के कुछ समय खातिर खींचल जा सकेला।

रोक के लक्षण (Symptoms and Signs) – एड्स रोग से ग्रसित रोगी के तरह–तरह के रोग हो जाला आ उहो बीमारी कवनो दवाई से ठीक ना होला। जइसे यदि केहू के खाँसी–सर्दी भा निमोनिया हो गइल त ओह एड्स से पीड़ित मरीज के उत्तम से उत्तम इलाज के बावजूद ठीक ना होला। मरीज के हालत दिन प दिन बिगड़त जाला आ अन्ततः ओकर मृत्यु हो जाला। इहे बिगड़त शारीरिक हालत में सामान्यतः रक्त के जाँच से एड्स के वायरस के पता चलेला। एह तरे के एच0 आई0 वी0 ग्रसित मरीज के कैपोसी सारकोमा भा लिम्फोमा जइसे कैंसर रोग ज्यादातर होला। अइसे एह संक्रमण के कुछ खास लक्षण बा – वजन घटना, बुखार आना, शरीर में गिल्टी होना, बराबर दस्त भा आमाशय होना, मुँह में छाला होना, क्षय रोग इत्यादि होना जे कवनो इलाज से ठीक ना होला।

एच0 आई0 बी0 (HIV) के विषाणु के फइले के कारण –

1. एच0 आई0 वी0 एगो यौन रोग भी होला। असुरक्षित अथवा निरोधरहित HIV ग्रसित साथी साथे यौन संबंध रखे से दूसरा व्यक्ति में वायरस फइल जाला। 2. एच0 आई0 वी0 संदूषित सूई भा सिरेंज के इस्तेमाल से, खास क के सूई से नशीला पदार्थ लेवे वाला आदमियन के इस्तेमाल सूई के इस्तेमाल से। 3. एच0 आई0 वी0 से ग्रसित व्यक्ति के रक्त कवनो दूसर व्यक्ति के शरीर में चढ़ावे से (एही से ब्लड बैंक में रक्त के मिलान के, अन्य बीमारियन के जाँच के साथे HIV के जाँच भी जरूर कइल जाला)। 4. एच0 आई0 वी0 से ग्रसित गर्भवती माँ से ओकरा होय वाला बच्चा भी एच0 आई0 वी0 के शिकार हो सकेला।

एच0 आई0 वी0 कवन परिस्थितियन में ना फइले –

1. एड्स से ग्रसित के स्पर्श से, हाथ मिलावे से। 2. एड्स से ग्रसित व्यक्ति के कपड़ा के इस्तेमाल से 3. एड्स से ग्रसित व्यक्ति के एके संडास के इस्तेमाल से 4. मच्छर भा खटमल के काटे से 5. एके टेलीफोन भा दफ्तर के उपकरण भा फैक्ट्री के औजार भा घर के उपकरण के इस्तेमाल से 6. खाँसे भा छींके से 7. मिल के खाये भा एके बर्तन के प्रयोग से 8. पब्लिक ट्रांसपोर्ट से साथ आवे जाये से एच0 आई0 वी0 ना फइले।

एड्स संबंधी भ्रांति – एड्स के भयावहता के चलते आम जनता में एड्स संबंधी बहुते भ्रांति फइल गइल बा। जइसे – कवनो महिला के

www.bhojpurisahityangan.com

परिवार नियोजन के ऑपरेशन करवावे से भा कॉपर टी लगवावे से भा गर्म निरोधक गोली खाये से ई रोग ना फइली। बल्कि कारण उचित भइला प एकरा बादो ई रोग फइल सकेला।

रोकथाम के उपाय –

1. एक से अधिक साथी के साथे यौन संबंध स्थापित ना करे के चाहीं।
2. एक से अधिक व्यक्ति के साथ यौन संबंध स्थापित करत समय निरोध के इस्तेमाल जरूर करे के चाहीं।
3. यौन जनित संक्रमण के पता चलते तुरन्त उपचार करवावे के चाहीं। साथी के भी उपचार करवावे के चाहीं।
4. शरीर में यदि रक्त चढ़ावे के स्थिति आइये जाए त एच0 आई0 वी0 रहित घोषित रक्त के ही चढ़वाई।
5. एच0 आई0 वी0 ग्रसित महिला लोगिन के कोशिश करे के चाहीं कि गर्भधारण ना करस। यदि गकली त एन्टी रेट्रो वायरल दवा के मदद से गर्भ के बच्चा के एच0 आई0 वी0 से बचावल जा सकेला।
6. हरमेसे विसंक्रमित सिरिंज भा सुई हस्तेमाल करे के चाहीं।
7. कान आ नाक छेदवावे खातिर हर बेर नया सूई के प्रयोग हर व्यक्ति खातिर करे के चाहीं।
8. अंग प्रत्यारोपण में अंगदान करे वाला व्यक्ति के एड्स मुक्त होखे के चाहीं।
9. कहीं भी रक्त गिर जाए त विषाणुनाशक ब्लीच से ओकरा के साफ करे के चाहीं।
10. गोदना भा टैटू के बाद इस्तेमाल कइल सूई भा लकड़ी के दोबारा दोसरा खातिर इस्तेमाल ना करे के चाहीं।
11. सैलून में दाढ़ी बनवावत खाँ नया ब्लेड के इस्तेमाल करे के चाहीं।
12. हर असावधानीयुक्त यौन संबंध एड्स ग्रसित व्यक्ति के शरीर में विषाणु के संख्या बढ़ा देला। एह से एह खतरनाक आ लाइलाज बीमारी के शरीर में प्रवेश ना करे देवे के चाहीं आ एकरा खातिर बतावल गइल सावधानियन के दृढ़तापूर्वक पालन करे के चाहीं। शरीर बा त सब बा, ना त कुछो ना।

◆

नज़्म

औरत के जिन्दगी

❑ डॉ० जवाहरलाल 'बेकस'

सबसे अधिक बेहाल बा औरत के जिन्दगी।
एगो बड़ा सवाल बा औरत के जिन्दगी।।
पैदा भइल त धंस गइल बित्ता भर जमीन।
तनिका भइल सेआन खतम हो गइल नींन।।
बेटी के बाढ़ दुनिया के आँखिन में गड़ेला।
आपन सुझे ना कुछ बस अनके सूझेला।
अनका बेटी के देखि के के ना सिहर-सिहर।
ताकेला आँख तान के रस्ता ठहर-ठहर।
बेटा करे बेजांय लाख तबहूँ साफ बा।
बस तीने खून ना हजार खून माफ बा।
केकरो बेटी-बहीन के इज्जत से खेल के।
दरवाजा बंद क लेला बाहर ढकेल के।
बेटी बेचारी जब कबो फरियाद करेले।
मुखिया चाहे परधान के जब इयाद करेले।
उहवों होला सुनवाई इज्जत के लूटि के।
थाना-पुलिस बेकार बा सब बड़ुवे झूठि के।
रिश्वत में लागल डाल बा औरत के जिन्दगी।
सबसे अधिक बेहाल बा औरत के जिन्दगी।

◆

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकृति के आमंत्रण - झारखण्ड

❑ डॉ० संध्या सिन्हा

प्रकृति के गोदी में बइठल राज्य झारखण्ड अपना प्राकृतिक सुषमा आ सुखद जलवायु खातिर प्रसिद्ध बा। वन–जंगल से आच्छादित झारखण्ड राज्य में प्राकृतिक विविधता देखे के मिलेला। एक ओर नेतरहाट अस सुरम्य वातावरण आ जलवायु त दोसर ओर पलामू आ जमशेदपुर के गरमी। एक ओर स्वर्णरेखा, खरकाई आ कोयल अइसन मौसमानुसार क्षीण आ विस्तृत होत नदी त दोसरा ओर सालो भर हहरत जलप्रपात। भारत के एह

क्षेत्र के अकेला राज्य झारखण्ड बा जहवाँ अतना सुन्दर सालभरवा हहरत जलप्रपात आ झरना रउआ के आमंत्रण देवेला। चलीं देखल जाओ।

हुंडरू जलप्रपात – राँची (झारखण्ड के राजधानी) से लगभग 25 किलोमीटर के दूरी प ई झरना रूप में हँस रहल बा। स्वर्णरेखा नदी इहईं 320 फीट के निचाई प अचके छटक के झरे लागेले आ अपना सोख फुहार से लोक के लुभावे लागेले। ई एगो पारिवारिक पिकनिक स्पॉट ह। राउर इहवाँ स्वागत बा। खाये–पीये के मामूली चीझ इहवाँ उपलब्ध होला।

जोन्हा जलप्रपात – राँची से राष्ट्रीय राजमार्ग 32 के रास्ते अनगढ़ा के पास चमकत–दमकत एह जलप्रपात के नाम जोन्हा गाँव के नाँव प परल बा। स्थानीय लोग एकरा के गंगा–नाला भी कहेला। कहल जाला सघन जंगलन में गंगा के सोता से एकर निर्माण भइल बा। एगो प्रचलित मान्यता बा कि गौतम बुद्ध से एकर कवनो प्रकार के संबंध भी बा। एह से ई के गौतम–धारा भी कहाला। इहवाँ एगो शासक द्वारा मंदिर आ आश्रम निर्मित बा।

दशम फॉल्स – राष्ट्रीय राजमार्ग–33 प राँची से 33 किलोमीटर के दूरी पतैमारा गाँव के पास दशम फॉल्स बा। बहुते सुन्दर आ प्रसिद्ध एह जलप्रपात के निर्माझा काँची नदी के 144 फीट के ऊँचाई से अचके छटक के गिरे से भइल बा। ई पिकनिक स्थल जतने लुभावन बा ओतने भौगर्भिक दृष्टि से रहस्यमय भी बा। ना जाने कतना सैलानियन के लील चुकल बा। एह से इहवाँ जाईं जरूर, बाकिर विशेष सावधानी के साथे।

पँचघाघ जलप्रपात – राँची–चाईबासा–सिमडेगा मार्ग प पंचघाघ अपना पाँच स्तरीय जलप्रपात खातिर मशहूर बा। पँचवा स्तर बहुत खतरनाक बा बाकिर दूसरा स्तर बहुते मनोरम आ

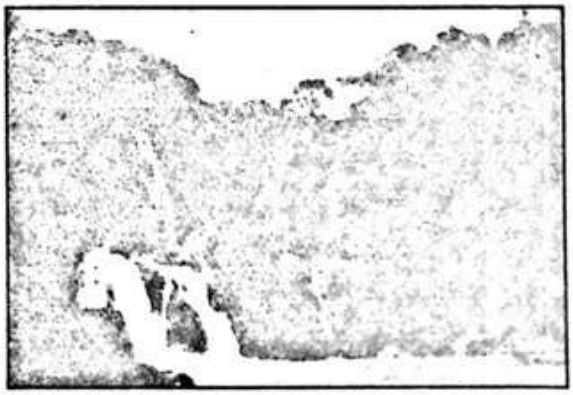

www.bhojpurisahityangan.com

सुगम बा।

हिरणी फॉल्स – राँची–चाईबासा मार्ग से 75 किलोमीटर के दूरी प हिरणी फॉल्स बहुत सघन जंगल के बीच रामगढ़ नदी प अवस्थित बा। हिरण के बहुतायत प्रजाति आ संख्या के कारण एक सघन जंगल के मध्य अवस्थित जलप्रपात के नाम हिरणी जलप्रपात पड़ल जे अत्यंत मनोरम पर्यटन स्थल बा।

लोघ जलप्रपात – पलामू प्रमंडल के लातेहार जिला के महुआटांड़ प्रखंड से 20 किलोमीटर के दूरी प महुआटांड़ वनक्षेत्र के भीतर लोघ भा बूढ़ा घाघ जलप्रपात बा। इहवाँ 468 फीट के निचाई प गिरत नदी बहुते सुन्दर दृश्य उपस्थित करेले। अइसे ई जलप्रपात राज्य के सबसे ऊँच जलप्रपात ह।

घाघरा फॉल्स – नेतरहाट से 7 किलोमीटर उत्तर में घाघरा नदी प 140 फीट निचाई प गिरे वाला झरना नयनसुखसागर बा।

मटिंडा झरना – धनबाद से 14 किलोमीटर दूर मुनीडीह गाँव के लगे हरियाली से भरल बहुते मनभावन बा।

धारागिरी झरना – पूर्वी सिंहभूम के घाटशिला के भीतरे धारागिरी झरना अवस्थित बा जे ना जाने कतना पौराणिक कथा अपना में समेटले बा।

उसरी जलप्रपात – धनबाद मार्ग के पूर्व. में 14 किलोमीटर के दूरी पर उसरी झरना

अवस्थित बा जे बहुते मनोरम बा। ई जलप्रपात पारसनाथ पहाड़ी के रेंज प उसरी नदी द्वारा तीन स्तर प गिरत लपिटात निर्मित बा।

दलमा अभ्यारण्य, बेतला अभ्यारण्य (पलामू), देउड़ी मंदिर (रांची–टाटा मार्ग), सूर्य मंदिर, रंकिणी मंदिर, नरवा पहाड़ यूरेनियम खान, वंशीधर मंदिर (नगरउटारी) जहवाँ नौ मन सोना से बनल ठोस बंशीधर के मूर्ति बा, टाटा आयरन एवं स्टील कंपनी तथा एकर सहयोगी उद्योग, एच0 ई0 सी0 उद्योग, राँची, राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (जमशेदपुर), लाख अनुसंधान संस्थान, नामकुम, रजरप्पा मंदिर (हजारीबाग जिला), रिखियाधाम, देवघर, बाबाधाम, राजमहल पहाड़ी आ नेतरहाट पहाड़ी स्थल आदि बहुते नयनाभिराम, आध्यात्मिक सुख आ भौतिक समृद्धि देबे वाला पर्यटन आ नामी–गिरामी स्थल इहवाँ के गौरव बढ़ा रहल बा।

◆

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

बेटी बोलली

❑ कृष्ण कुमार

उस्मान के बिआह कइला ढ़ेर दिन हो गइल रहे। बाकिर कवनो बाल–बच्चा ना भइल। धन के कमी ना रहे, तबो मन पतौखिआइल रहत रहे। संतान के लालसा मन के तुरि देलस। आंखिन के नीन उड़िया गइल। रात तरेगन गिनत बीते लागल। बड़ा फेरा में परल रहन। देवासे–देवासे जूता तुरलें। सुफी–संतन के दोआ–आशीर्वाद लेलें। बाकिर कवनो फएदा ना भइल। गाड़ी कवनो मुकाम प ना पहुंचल। बुरबक के खूंटा लेखा दवरे प रहि गइल। कवनो ओनईस–बीस ना। एकदम जस के तस...। उबिअइला के बाद एक रात हिम्मत बन्हलें। साथे सुतल घरनी के मन टोवलें, 'अतना अफराद धन–दउलत के हबेखी ? खानदान के नाव निबुद होखे के ठेकान लागल बा।' उमिर ढ़रल जाता। कवना दिन ले सबुर कइल जाई। हमार मन बा, दोसर राह खोजल जाउ। कवनो गरीब–गुरबा के बेटी ले आके फेरू से घर बसावल जाओ...।'

काठो के सवति ना भावे। घरनी तेवर बदललस, 'ई का कहऽतानी ? पगला गईनी का ? ई सब एह घर में कबो ना होई ? हम आपन जान दे देब, बाकिर सवति साथे ना रहबि। आ ई के जानऽता कि केकरा में दोष बा ? हमरा में कि रावा में ? बिआह के नाँव मत लिहीं। सबुर से रहिं। देर बा, अन्हेर नइखे। रात के आगा दिन होला। अबहिं कवनो उमिर नइखे बीतल। चालिस–पचास कवनो उमिर ना हऽ। साठा तऽ पाठा...। सबुर के डाढ़ि में मेवा फरेला। सभ अपना समय पऽ होला।'

तब ऊ लाचार हो गइलें। मन के हवाई–किला बिना कवनो बेयार के पलक मारते अररा के भंसि गइल। घरनी के बात तजबिजत आ दिन गिनत समय जाया करे लगलें। बाकिर दूनों बेकत के बतकहि के थोरहिं दिनन बाद घरनी के कहाब सोरहो आना सांच हो गइल। परकिरति के करतब आदमी के सोच से परे होला। समय के भुजा दवंग होला। ऊ जे ना करा दे। बीतत समय के साथे बड़ी घरछना से घर अंजोर भइल। एगो सुन्नर बेटी जनमल। दूनों परानी खुशी से झुमि उठलें..।

रावा तनिको मति घबड़ाईं, ई कथा हमनिन के देश के ना हऽ। हमनिन के भारत महान हऽ। हमनिन के विदेशी लोग से आगे परिला जा...। परदा के भीतरे सब खेल हो जाला आ केहू के मालूमो ना हो पावेला। हमनी के चुजा ना मुआई जा, अंडे फोर दीं ला जा। जनमते बेटी के हतेया कऽ देबे के रिवाज सबसे पहिले कवना देश के कोना से शुरू भइल, ई खोजल खासा टेढ़ आ दुस्तर काम बा। बाकिर 2011 ई0 के जनगणना एह बात के टटका गवाह बा कि 1000 मरद पऽ मेहरारून के संख्या 914 हो गइल बाकिर तबो हमनिन के आपन राह ना बदलनी जा। चुपा–चोरी अल्ट्रासाउन्ड करा के बेटिन के भ्रूण हतेया जोर–शोर से जारी रखले बानी जा। अरब देश के इतिहास एह बात के गवाह बा कि ओइजा कईएक कबीला वाला घर में बेटी के जनमते झटकवाहे जीअते रेत में गाड़ दिहल जाला....।

हं, तऽ उस्मानो ओनहिं के रहन। एक ओरे घर में अंजोर भइल तऽ बाहर आन्हार लउकल। सामाजिक रिवाज–परंपरा के निरवाह कइल ओह दूनों परानी के बूता से बाहर बुझाये लागल। बेटी के हंसी–किलकारी ओह लोग के अपना गिरफ्त में गिरफ्तार कइलस। राजा दशरथ लेखा चउथापन

www.bhojpurisahityangan.com

में लोग बेटी के मुंह देखले रहन। पुत्री–मोह में अनायासे अझुरा गइलें। तेआगल ना गइल। विवश हो गइलें। बेटी के जीअते रेत में गाड़ल उनका से पार ना लागल। बस्ती के लोग ताना मारे लगलें, 'का हो, कहिया काम फते होई ? काहे महटिआइल बाड़ऽ। छंउड़ी के पोसब का ? काहे नइख सुनत ? बुझाता, बहिर हो गइल बाड़ऽ... ना... ?'

उबिया के दूनो परानी पक्का फैसला कऽ लेलें, 'कुछुओ होई, बाकिर हमनिन के अइसन कुकरम ना करबि जा। बेटा, बेटी में कवनो फरक ना हऽ। सभ संतान बरोबर होला। कबो बेटी के ना मुआइबि जा...।'

बस्ती के लोग ना महटिआइल। रोजे–रोज उद्बेगे लागल। ओह लोग के जीअल मोश्किल कऽ देहल। आवा–जाही, नेवता–पेहान, हुक्का–पानी, बोल–चाल सभ बन्द...। तब बड़ा फेरा में ऊ लोग परलें, 'आहि दादा, अब कइसे एइजा रहल जाई...।'

आखिरी में ऊ लोग एहु बात प उतारू हो गइलें कि बस्ती छोड़ दिहल जाओ। कतहिं दोसरा जगहा चल चलिं जा। फेरू धन के मोह घेर लेलसि, 'घर–दुआर, खेत–बधारि, बाग–बगइचा एह सब के का होई ? एकरा के केहू किनी–बेसाहि हइये ना आ ना दोसरा जगे जाए वाला ई चीज बा...?'

सांप–छुछुनरि के हाल हो गइल। ना घोंटात रहे आ ना उगिलात रहे। बड़ा आफादरा में परि गइलें उस्मान। कतनो अकिल–बुद्धि लगावसु बाकिर ऊँट कवनो करवट ना बइठत रहे। बेटी जइसे–जइसे सेयान होत गइल, ओकरा से मोह–ममता अवरू अधिका बढ़त गइल। अब ले लोग अपना जाने एको उधामत से बाजि ना अइलें। डांट–फटकार, चोरी–डकइति, लूट–पाट, छिना–झपटि, डेरावल–धमकावल सभ कइल बाकिर उस्मान टस से मस ना भइलें। समय के साथे बेटी पांच बरिस के हो गइल। जतने ऊ सुन्नर रहे, ओतने समझदार। बुलन्द इरादा वाली आ दृढ़ निश्चयी। समझदारी उमिर ना गुने। कतना लोग बुढ़ारी ले बुरबके रहि जालें आ केहू जनमते बारहगुना...। उहो बेटी कुछ ओइसने रहे।

अचके में एक दिन संउसे बस्ती के लोग एकवटले उस्मान के दुआरी जुमि अइलें, 'संरह बिगाड़ल सबसे खराब काम हऽ। तोहरा से सभे कहि के थाकि गइल। कवनो उधामत छोड़ल ना गइल। बाकिर तू केहू के सुनत नइख। बस्ती भर में तोहरे एगो बेटी सबसे छछलोल भइल बिआ। बस्ती के रिवाज बिगाड़ऽतार। तऽ कान खोलि के सुन ल। बस आजु आ काल्हू। दू दिन के मोहलत दिआता। अगर एह बीचे तू अपना बेटी के दफन नइख क देत त परसो तोहरा तीनों आदमी के दफन बस्ती के लोग क दी। सम्हरि जा, ई तोहरा के आखिरी बार हिदाएत कइल जाता। आगे अब तू जानऽ आ तोहार काम जाने। फेरू केहू के दोष मत दिह...।'

लोगन के बतकहि सुनि तिलमिला गइलें उस्मान। एकदमे डेरा गइलें। तरवा तर के धरती घसकत बुझाये लागल। अक्का–बक्का लागि गइल। उनकर बेटी ओइजे रहे। लोगन के बात सुनि मरे खातिर संकल्पित हो गइल। तब सभका गइला के बाद कहलसि, 'अब्बा, देरी कइला के तनिको काम नइखे। हम तइयार बानी। अब हम एको सेकेन्ड खातिर जीअल नइखीं चाहत। हमरे चलते रावा सभे के ई हाल हो रहल बा। रावा सभे सुख–चैन से रहिं जा, एहि में हमरा खुशी होई। हम एह काम खातिर खुशी मन से राजी बानी। रावा आजु आ अबहिंए एह काम के सपरा दीं। माई–बाबू खातिर बेटा–बेटी के कुछ फर्ज होला। हम ओह फर्ज के चुकावल चाहऽतानी...।' आ खुशी के लोर

www.bhojpurisahityangan.com

से ओकर दूनों आंखि मोरध्वज लेखा लबरेज हो गइल। बेटी के बतकहि सुनि फफकि गइले उस्मान। खइाल–पीअल छोड़ि देलें। रात गऽ दूनों बेकत बेटी के गोदी में जंतले सिसकत बिहान कइलें। सांझि के बेरा कुदारी उठवलें आ सुसुकत कहलें उस्मान, 'चल बेटी...।'

बेटी के साथे लेले बस्ती के बाहर अइलें। रेत में गड़हा खोने के शुरू कइलें। जब कब्रनुमा गड़हा पूरा हो गइल, तऽ उस्मान कहलें, 'बेटी, एह में सुति जा...।'

अबोध, तेज, भोली लइकी कब्र में सुति गइल। ओकरा बाद उस्मान ओकरा के रेत से तोपे के काम लगवलें। ऊ अइसन करते रहन कि बेटी आपन छोट–छोट दूनों हाथ ऊपर उठवलसि आ बोललि, 'रूकीं... रूकीं अब्बा जान। रउआ दाढी में बहुते रेत के कण फंसल बा। तनिका झुकिं। हम ओकरा के झार दीं...।'

फफकि गइलें उस्मान। बेटी के बात ना सुनलें। ताबड़तोड़ ओकरा देहि पऽ रेत डालि के हमेशा खातिर सुता देलें। उस्मान अकेला अरब रहन जे बेटी के इयाद में रोअत–रोअत आपन संउसे जिनिगी गुजार देलें...।

महावीर स्थान के निकट,
करमन टोला, आरा, बिहार
मो0 - 9570809971

अपने सभे से निहोरा बा कि एह साल खातिर अंगना के सदस्यता ले लीहीं।

x x x

प्रकाशति रचनन में व्यक्त विचार रचनाकार के आपन ह। एकरा से सम्पादक के सहमत भइल जरूरी नइखे।

– प्र० संपादक

गीत

तेवरी

❑ डॉ० राजकुमार सिंह 'कुमार' विष्णुपुरी

घुट-घुटके जी रहल इनसान बा,
बरिसन से देख रहल भगवान बा।

आसमान के जानिब सर कइसे उठे ?
फन उठाके मार रहल मणिवान बा।

करज के बोझ निरंतर बढ़त गइल,
सिर अपना धून रहल किसान बा।

लीडर भा डीलर के सदा पौ बारह,
शरण हमेश पा रहल शैतान बा।

हर कदम पर पहरा बा चाक-चौवंद,
सुरक्षा में रह रहल धनवान बा।

'कुमार' ई जहां के बात हर निराला
भरल बाजार बिक रहल ईमान बा।

विष्णुपुरा, गुलटेनगंज, सारण, बिहार

◆

लोकगीत

हरदी के गीत

❑ प्रस्तुति : अलका श्रीवास्तव

बावा हो दशरथ बाबा, धन्य रउरा बानी जी
कहिया के हरदी सँचले रउरा बानी जी
हमरो राम जी पूता बड़ा सुकुवार जी
हरदी के झांकि झूंकि सहलो ना जाला जी

चाचा हो कवना चाचा धन्य रउरा बानी जी
कहिया के हरदी सँचले रउरा बानी
हमरो राम जी पूजा बड़ा सुकुवार जी
हरद के झांकि झूंकि सहला ना जाला जी

(असहीं सभ रिश्ता के लगा के गावल जाई)

◆

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

बातचीत

❑ छाया प्रसाद

पाठक जी के पतोह राधिका शिवरात के बरत कइले रही, उनका भोला बाबा के मंदिर जाए के बड़ा मन रहे। राधिका अपना सास से कहली कि "अम्मा जी हमनी के भोला बाबा के बरत कइले बानी त चलीं ना मंदिर में भोला बाबा पर जल ढार आवल जाओ।"

सास – ना ये बाबू हमरा गोड़ से ना चलल जाई। देखते बाडू गोड़ के दरद कइसन तबाह कइले बा, बाकिर तोहरा जाए के बा त चल जा, तू अइसन कर, मिसराइन के इहां चल जा, ऊहो शिवरात के बरत करेली। उनके साथे मंदिर चल जा। हम इहहीं से भोले बाबा के गोड़ लागतानी आ माफी मांगत बानी, ठीक रखिहें भोला बाबा त आगे साल शिवरात के मंदिर जरूरे जाइब।

राधिका – ठीक कहत बानी अम्मा जी, अकेले जाए में अच्छा नइखे लागत। मिसराइन चाची के साथे चल जात बानी। राधिका पूजा के थरिया उठा के मिसराइन के इहाँ चल गइली।

मिसराइन घर के दुआरी पर बइठल रहली। राधिका के देख के बड़ा खुश भइली। कहे लगली, आज चाची के इयाद कइसे आइल ह ? आव बइठ।

राधिका – राधिका चाची के गोड़ छू के प्रणाम कइली आउर कहे लगली, "चाची आज शिवरात बा नू, रउरो त वरत कइलेहीं होखब।"

मिसराइन – "हाँ हमहूँ वरत कइले बानी, तूहों कइले बाडू। अच्छा बा इ वरत सब सुहागिन के करे के चाहीं।"

राधिका – "चाची हम एही से अइनी हं कि रउरा त मंदिर जइबे करब त हमहूँ रउरा साथे चल जाएब, अम्मा जी भी वरत त कइले बाड़ी बाकिर गोड़ के दरद उनका के परेशान कइले बा। एही से कहली हम मंदिर ना जा सकब, तू चाची के संगे चल जा।"

मिसराइन – "ठीके बा हमहूँ तनी काम ओरिया लीं त चलत बानी। का कहीं ए दुल्हिन, हमरा के देख ना गोड़ कइसन फूल गइल बा, बाकी मंदिर जाएब जरूर।"

राधिका – "कइसे भइल चाची, ई त लागत बा कि चोट लागल बा। करिआ–करिआ दाग हो गइल बा। कइसे अइसन हो गइल ?"

मिसराइन – "का कहीं तोहरा के, बाकिर पूछ ताडू त बता देत बानी। ई तोहरा चाचा के कृपा ह। भूत चढ़ेला त कुछो ना समझस। लागे ले तड़ातड़ मारे। जे मिली ऊ पकड़ के चला देवे लन। जानत बाडू हम बचपने से शिवरात वरत करीले। हमार सखि सहेलियन सब कहेली, तू बचपने से वरत करेले ऐही से तोहरा साक्षाते शिव जी मिलल बाड़े। साँचहूँ ए दुल्हिन, जान कि भंगेड़ी ओसहीं, गंजेड़ी ओसहीं आ शिवजी लेखा भूतहो ओसहीं, जान कि जब खीस बरी नूं त भूतहा अइसन नांचे लागले। मारे खीस के मारपीट करे लागे लन, जइसे कि अब परलय आ जाई। आ खीस उतर जाइ नू त एकदमे शान्त होके शिव जी लेखा चुपचाप बइठ जइहें। लगबे ना करी कि अबही एतना बवाल मचइले रहस।

राधिका – "सांचो चाची! बाकी ई त नीमन नइखे। देखीं त का हालत हो गइल बा राउर ?"

मिसराइन – "अच्छा जाए द। का करे के बा। शिवजी जइसे चहिहें ओइसे रहहीं के पड़ी

www.bhojpurisahityangan.com

नू। त चल चले के मंदिर।"

मिसराइन आ राधिका मंदिर चल गइल लोग बाकि राधिका के मन में चाची के कहल बात अइसन गड़ गइल कि केहू तरह से पूजा करके अपना घरे लौट अइली। बाकी चाची के गोड़ के चोट ना भूला पइली आ मने–मने सोचे लगली, हमनी मेहरारू लोग के सोंच में बहुते बदलाव लावे के पड़ी। ना त चाची अइसन अंधविश्वास से घिर के मरद के अत्याचार ना जाने कबले सहे के पड़ी।

◆

गीत

अंगना तीरथधाम

❑ हरिद्वार प्रसाद 'किसलय'

अंगना में बीतल लरिकइयाँ हो, हम रहली नादान।
माई के गोदी में बाबू के कान्हे, सगरे घुमावसु गइयाँ हो।
सभे करेला मान।। अंगना।।
दीदी बोलावे हाथ धरावे, खेल खेलावे भइया हो।
सभे हमरे गुलाम अंगना।।२।।
पढ़सु-पढ़ावसु क्रिकेट खेलावसु, शोभा बढ़त अंगनइया हो
सभके रहली अरमान अंगना।।३।।
छने अंगना छने घरवा में रूसी, लेके मनावत भइया हो।
जेकर बसे परान अंगना।।४।।
चूरा चबेनी अंगना में फांकी, उड़ि उड़ि खात चिरईया हो
धरीं होईं परशान अंगना।।५।।
सभे दुलारेले किसलय पुकारे ले, गोदी खेलावे कन्हइया हो
देखि मारे मुसुकान अंगना।।६।।
हाथ उठा के 'मामा' बोलाई, चन्दा के धई धई नईयाँ हो
अंगना तीरथ धाम।।७।।
अंगने में बीतल समइया हो अब भइनी सेयान।।

अध्यक्ष, भो0 जि0 मो0 सा0 स0, आरा
मो0 – 9304829856

◆

का रउआ जानतानी...

1. संथाली भाषा के लिपि के का नाम ह ?
2. ओ दूनो क्रिकेट खिलाड़ी के नांव जो एके पाली में पूरा दसो विकेट ले ले बाड़न।
3. प्लास्टिक पइसा का ह ?
4. भारत के अलावे आउर कवन–कवन देश 15 अगस्त के आपन स्वतंत्रता दिवस मनावेले।
5. रोहन आपन जन्मदिन हर चार बरिस के बाद मनावेले। उनकर जन्मदिन का ह ?
6. जापानी शैली के पुष्प सज्जा कला के का कहल जाला ?
7. बीरबल के असली नाँव का रहे ?
8. गाँधी जी के केकरा के आपन राजनीतिक गुरु मनले बाड़े ?
9. सिक्ख धर्म के पाँच 'क' का होला ?
10. एगो कवि रहन जे एगो गणितज्ञ रहन आ सटीक 'कैलेण्डर बनवले। 'रूबायत' के रचनाकार के रूप में मशहूर बाड़े।
11. प्राचीन काल में मसाला द्वीप केकर नाँव रहे ?
12. जनवरी 28, 1986 आ फरवरी 1, 2003 दूनूं के अंतरिक्ष विमानन के त्रासदी दिवस कहल जाला। काहे ?

उत्तर :– 1. ओल चिकी 2. जिमलाकर (इंग्लैंड – 1956 ई0) आ अनिल कुंबले (भारत – 1999 ई0) 3. क्रेडिट कार्ड 4. दक्षिण कोरिया आ बहराइन 5. 29 फरवरी 6. इकेबाना 7. महेश दास 8. गोपालकृष्ण गोखले 9. केश, कच्छ, कड़ा, कंघा, आ कृपाण 10. उमर खैय्याम 11. मलूका आ बन्दा द्वीप (इंडोनेशिया) 12. चैलेंजर आ कोलम्बिया अंतरिक्ष शटल के विनाश के कारण

◆

www.bhojpurisahityangan.com

विचार-विमर्श

बेटी से बहु ले यात्रा

❑ प्रतिभा प्रसाद

बेटी से बहु तक पहुँचे खातिर बेटी के मन में हजारों अरमान फूटे लागेला आ बेटी के माई–बाबा बेटी खातिर 'वर' खोजे में जुट जाले। घर मिल गइल त बियाह के तइयारी। बाकिर तइयारियो केतना तरह के होखे ला। गहना–गुड़िया के, कपड़ा लत्ता के, साज–सामान के आदि–आदि। साथहिं एगो तइयारी होला बेटी से बहु बने के यात्रा के। सखी लोग जब बेटी के सिखावेली त माई आ आजी आपन अँचरा के गिरह खोल के बहु के एक–एक कर्त्तव्य के बबुनी के जेहन में गूँथेली। पहिले कर्त्तव्य करीह त अधिकार अपने आप तहरा लगे आ जाई। कुछु मँगिह मत। तोहार पूरा समय नया घर के, घर के लोगिन खातिर समर्पित होखे के चाहीं। बाकी एमें से अपना वरो खातिर समय निकलिह। अक्सर देखल जाला कि माई आ आजी, ननद व जेठानी अपन आस–पात पतोह के घुमावत रह जाली। आ जब पतोह अपना वर के पास जाले त थक के चूर। वर से बात करे के पहिलहीं नीन्द में समा जाले। बड़ी चतुराई से वर खातिर समय निकालल जरूरी बा। 'जे वर के मन भाये उहे दुल्हिन कहलाये।' वर के मन से जवन कनिया उतरल, से गइल। बड़ी प्यार से मुस्का के अपना समय पर दूल्हा के आफिस से आवते नाश्ता पानी ले आवे के चाहीं। ई रिश्ता–निर्माण के समय होला। धीरे–धीरे वर के साथ संबंध प्रगाढ़ होला। उनकर मन के बात समझे के होला। एह बात के जे ना समझले त दूनो जाना जीवन भर मन से अकेले रह जाले। वर के माई बाबा के भी एह संबंध के बनावे में मदद करे के चाहीं। पतोह के हर समय काम में ओझरा के राखल ठीक नइखे। काम त जिनगी भर होखी। बियाह के बाद कम से कम साल–दू साल ले बेटा–पतोह के एक–दूसरा खातिर भरपूर समय देबे के चाहीं। आखिर ऊ त बेटवे गुणे नूं आइल बाड़ी। पहिले बेटा के मन में बसे दीं। तब घर गृहस्थी व पारिवारिक धर्म के कर्त्तव्य लादीं। रहत–रहत धीरे–धीरे लइकिन सब पारिवारिक ध र्म खुदे सीख लेवेली। आपन बेटा से मिले–जुले में जादे रोक–टोक कइल ठीक नइखे।

माई–बाप के हमेशा ई डर सतावे ला कि कहीं बेटवा हाथ से निकल त ना जाई। पतोहिया आपन बात सीखा त ना दीही। अरे बाबा, राउर लइका बबुआ त नइखें नूं। ऊ अपना के, आ अपना जिनगी के समझता। राउर दीहल संस्कार ओकरा के हरमेसे प्रेरित करेला। हर बात के दोष भी पतोह पर ठोकल ठीक नइखे। अपना बेटा के मन त पढ़े के सीखीं। बेटी से बहू बने के यात्रा में वर के माई–बाबा, ननद–देवर आ गोतनी के अहम् भूमिका होला। पतोह त ढेरे अरमान लेके आवेली। एको गो अरमान पूरा हो जाता त खुश हो जाली। परिवारो के ओह में खुश होखे के चाहीं। जहाँ ताना–गाभी भइल कि काम बिगड़ल। माई– बाबू के जादे समझदारी से काम लेबे के चाहीं। बहु बन के बसे के जिम्मेदारी खाली लइकियन के ना होला। वरो पक्ष के जिम्मेदारी ओतने होला। ठीक कहल जाला 'ढुकते बहुरिया जनमते लइका जे लौ लगायब से लागी।' ठीक बा नूं।

सी/जी0, बी0 एस0 पैलेस, रामनगर,
रोड नं0 – 6, सोनारी, जमशेदपुर
मो0 – 9334918540 ◆

www.bhojpurisahityangan.com

आपन लोग

प्रभावती जी के पुण्यस्मृति

❑ गजेन्द्र प्रसाद वर्मा 'मोहन'

जेल से छुटला के बाद 1946–47 में जयप्रकाश जी तथा प्रभावती जी सिताब दियारा आइल रहे लोग। प्रभावती जी गाँव के महिला लोग के अपना अंगना में बइठा के चर्खा कातत रहली। हमरा जइसन याद बुझाता कि ओही घरी हमरा प्रभावती जी के प्रथम दर्शन करे के सौभाग्य मिलल। गोर रंग गरिमामय सुंदर चेहरा, नीला कोर के सफेद खादी के साड़ी में बहुत ही पूजनीय व्यक्तित्व रहे।

1948 में सिताब दियारा के सेवाश्रम के बगीचा में मंच पर सफेद चादर बिछल रहे। जेपी समाजवाद के व्याख्या करत रहस। मंच के नीचे दरी पर प्रभावती जी निर्विकार भाव से चर्खा चलावत रहली। आधा–आधा घंटा पर संतरा के रस निकाल के गिलास में जेपी के पिए खातिर देत रहली। हमनी के मंत्रमुग्ध जेपी के सुनत रहनी, प्रभाजी के देखत रहनी।

लगभग ओही समय के आसपास पटना, कदमकुँआ में किराया के मकान में हमनी के जयप्रभा के दर्शन करे के सौभाग्य मिलल। जे पी के हाथ में चोट लागल रहे। पट्टी बंधल रहे। प्रभावती जीसेव के रस निकाल के उनका के गिलास में पीए के देत रहली।

1951 में छोटकी फुआ के शादी में हमनी पटना अदालतगंज क्वार्टर में रहनी। प्रभावती जी अपने से बाजार जा के बियाह के सामान खरीदली। बारात के स्वागत के तैयारी भी उनके देख–रेख में भइल।

तब तक हम पाँचवा वर्ग में विद्यालय में पढ़े लागल रहनी। प्रभावती जी के बारे में जाने के उत्सुकता भइल। हमार दादाजी बतवलन – चम्पारण सत्याग्रह के समय गांधी जी बिहार में पहिला बेर अइलन। ब्रज किशोर बाबू तथा राजेन्द्र बाबू गाँधी जी के मुख्य सहयोगी भइल लोग। ब्रजकिशोर बाबू के बेटी प्रभावती जी के शादी जयप्रकाश जी से भइल। प्रभावती जी के छोट बहिन सत्यवती जी के शादी राजेन्द्र बाबू के बड़ पुत्र मृत्युंजय बाबू से भइल। जयप्रकाश जी पटना में आइएससी के बहुत ही मेधावी छात्र रहस। आइएससी के बाद इंजीनियरिंग में जा सकत रहस भा वैज्ञानिक बन सकत रहस। आइएससी कर के कलक्टर भी बन सकत रहस। बाकिर विश्वविद्यालय परीक्षा के कुछ दिन पहलहीं पढ़ाई छोड़ देलन। अंग्रेज सरकार से सहायता पावे वाला कवनो शिक्षण संस्थान में पढ़े के तैयार ना भइलन।

1921 में अमेरिका जाए के तैयार भइलन। प्रभावती जी के कहल गइल कि ऊ जे पी के अमेरिका जाए से रोकस बाकिर प्रभावती जी जे पी के रास्ता के रोड़ा बने के तैयार ना भइली। जे पी लगभग सात वर्ष तक अमेरिका में मेहनत करके पढ़ाई कइलन। प्रभावती जी गाँधी आश्रम में बा–बापू के सेवा कइली। गाँधी विचार के प्रभाव में प्रभावती जी ब्रह्मचर्यव्रत के आजीवन पालन के प्रतिज्ञा कर लेली। बा बापू उनका के अपना बेटी मानत रहे लोग।

1929 में अमेरिका से लौटला के बाद जे पी गाँधी आश्रम गइलन। बापू से जे पी के प्रभावती के ब्रह्मचर्यव्रत के जानकारी मिलल। प्रभावती जी के व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सम्मान करे खातिर जे पी भी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लेलन। जयप्रभा के

www.bhojpurisahityangan.com

दाम्पत्य के तुलना संभवतः विश्व में मिलल कठिन बा।

प्रभावती जी जे पी के माता अइसन देखभाल करत रहली। कब का खाए के बा, का ना खाए के बा, कवन दवाई कब देबे के बा, कौन कपड़ा कब पहिने के बा, कब आराम करे के बा, अतिथि सत्कार कइसे करे के बा, ई सब प्रभावती जी ही करत रहली।

पंडित जवाहरलाल नेहरूजी के धर्मपत्नी कमला जी से प्रभावती जी के गहरा प्रेम रहे। कमला जी प्रभा के अपना छोट बहिन मानत रही। इंदु जी सब साड़ी पहिने के शुरू कइली त कमला जी प्रभावती जी से ही पटना खादी भंडार से खादी के साड़ी मंगववली। कमला जी भयंकर बीमारी के हालत में प्रभावती जी के अपना पास बोला लेत रहली। उनका से अपना मन के बात कहत रहली। पत्र में भी लिखत रहली। पंडित जवाहर लाल जी भी पत्र में लिखत रहस 'प्रिय प्रभा,....., तुम्हारा भाई जवाहर।

कस्तूरबा के अंतिम बीमारी में भी उनका सेवा खातिर प्रभावती जी के जेल से बा बापू के जेल में स्थानान्तरित कइल गइल। कस्तूरबा के अंतिम संस्कार के बाद बापू बा के चूड़ी प्रभावती जी गाँधी में बांट देलन।

प्रभावती जी विचार से गाँधीवादी रहली। जे पी ओह समय मार्क्सवादी रहस। लेकिन जयप्रभा एक दूसरा के विचार पर आपन विचार थोपे के ना चाहत रहे लोग। देवली कैम्प जेल से जेपी कुछ गुप्त सूचना प्रभावती जी के हाथ से भेजे के चाहत रहलन। लेकिन प्रभावती जी एह तरह के गुप्तकाम में सहयोग करे से हिचकिचात रही। धीरे–धीरे जे पी में ही विचार परिवर्तन होत गइल। 1953 में जे पी गाँधीवादी से प्रभावित होके विनोबा जी के सर्वोदय आंदोलन में आ गइलन। दलगत राजनीति से सन्यास ले लिहलन।

एकरा बाद प्रायः हर साल फरवरी में जयप्रभा दंपत्ति सर्वोदय मेला में सिताबदियारा आवे लोग। हमनी के बराबर उनका आशीर्वाद मिले। स्वास्थ्य तथा शिक्षा के बारे में पूछस तथा उत्साहित करस। अपना पराया के भेद जयप्रभा में बिल्कुल ना रहे। एक बार एक महिला प्रभावती जी से कहली कि ओह महिला के संतान नइखे। उनका के आशीर्वाद चाहीं। प्रभावती जी समझवली कि खाली आपन संतान के ही संतान ना समझे के चाहीं। सब लइकन के आपन संतान समझीं। सिताबदियारा में जयप्रभा के जोड़ी कभी–कभी लिट्टी चोखा पार्टी खातिर हमनी किहां विशेष रूप से आवस।

विदेश यात्रा में भी प्रभावती जी जे पी के साथ जात रहली। 1962 में उत्तरी रोडेशिया में सत्याग्रह करे के रहे। जेल, लाठी, गोली के आशंका रहे। फिर भी प्रभावती जी कहली कि 'हमहूँ सत्याग्रह करब।' कइली। 1969 में जे पी के साथ आस्ट्रेलिया भी गइली।

पारिवारिक मौका पर भी प्रभावती जी के विशेष आशीर्वाद मिलत रहे। हमरा विवाह में दिन भर रह के मातृपूजा के पूरा विधि कइली। हमार धर्मपत्नी रेणु के आशीर्वाद भी दीहली। 1967 में हमरा जुड़वा पुत्र भइला पर प्रभावती जी 'लव–कुश' नाम रखली।

1970 जनवरी में राउरकेला शांति सेना के कार्यक्रम में जयप्रभा के जोड़ी गइल त हमरा क्वार्टर पर भी आके कुछ देर रहल लोग। लइकन के स्वास्थ्य आ इलाज आदि के विषय में बातचीत कइल लोग। यदि दिल्ली भा बम्बई इलाज के जरूरत होई तब सहायता करीत लोग।

1970 मई में हमार छोट बहिन सरोज के शादी में हाजीपुर में दो दिन रूक के सब विधि में

www.bhojpurisahityangan.com

भाग लीहल लोग। समधी के बड़ भाई के गोड़ पर धोती रखके जे पी ले भी मिललन।

1971 में बंगलादेश के आंदोलन में जेपी विश्व भर में घूम–घूम के बंगलादेश के सहायता खातिर विश्वमत तैयार कइलन। लौटला के बाद मुजफ्फरपुर में हृदयाघात से अस्वस्थ हो गइलन। राउरकेला से हमरा पत्र के जवाब में प्रभावती जी लिखली कि 'तहार बाबूजी अब स्वस्थ बाड़न।' ओकरा बाद चम्बल घाटी में भी जयप्रभा के जोड़ी शांति स्थापित करे खातिर बागी लोग के बीच में काफी दौड़–धूप कइल लोग। बागी लोग आत्म समर्पण कइल। 1972 में जे पी के वाराणसी में ऑपरेशन भइल। जेपी के देखभाल करे में प्रभावती जी अपना स्वास्थ्य के खयाल ना कइली। तब तक प्रभावती जी के कैंसर के बीमारी बहुत ही गंभीर रूप धारण कर लेले रहे। बम्बई में इलाज के बावजूद भी प्रभावती जी के स्वास्थ्य में सुधार ना भइल। जयप्रभा पटना आ गइल लोग। प्रभावती जी के अंतिम इच्छा रहे अनिल भइया के शादी करे के। अनिल भइया जेपी के छोट भाई राजेश्वर प्रसाद जी के पुत्र हवन। अप्रैल में पटना में तिलक के दिने प्रभावती जी के तबीयत बहुत खराब हो गइल। बिनोवा जी उनका के हर साँस में 'राम–हरि' के याद करे के बतवले रहस। जे पी भी उनका के देख के कहलन 'हे, राम'। प्रभावती जी 14 अप्रैल 1973 के आपन पार्थिव शरीर छोड़ के अनंत प्रभा में विलीन हो गइली। उनका इच्छानुसार अनिल भइया के शादी बहुत ही साधारण तरीका से भइल। जेपी प्रभा जी के पार्थिव शरीर के पास अकेले कमरा में बंद होके फूट–फूट के रोवलन। पटना में अंतिम संस्कार भइल।

हमनी के बुझाइल कि अब जे पी अनाथ हो गइलन। संभवतः प्रभावती जी के अदृश्य शक्ति जे पी से अभी भी कुछ काम करावत रहे।

8 अक्टूबर 1979 के दिन जे पी भी अनंत प्रभा में विलीन हो गइलन। जयप्रभा के जोड़ी अमर हो गइल।

प्रभावती निष्काम सेवा के अवतार रहली। महात्मा गाँधी के बारे में लिखे के क्रम में 'लुई फिशर' लिखले रहलन – 'प्रभावती सेवा करे खातिर आतुर रहली बाकिर साथहि साथे गुमनामी पसंद करेली।'

◆

गज़ल

बिछल चाँदनी

❑ पद्मा मिश्रा

कारे बदरा के संग झूमते झामते,
जइसे छिटकल गगन में धवल चाँदनी!
माथ पर चाँद जस, सोभेला बिंदिया,
फूल–पंखुरी प, जइसे धइल चाँदनी।
प्रीत के गांव में, नेह के छांव में,
मन के मंदिर, बन दियना जरल चाँदनी!
धानी चूनर सजल, धान के खेत जस,
जइसे महुआ के मातल लहर चाँदनी।
जगमगाइल तरईयंन के छइयां तले,
नीली नदिया में झिलमिल करे चाँदनी।
सुख से सिहरत धरतिया के मन भा गइल,
बन के सपना नयन में खिलल चाँदनी।
दूर परदेशी संग, जबसे नैना मिलल,
मन के अंगना में सगरो बिछल चाँदनी।
याद पिय के हियाव में बसा के सखी,
बन के लोरवा नयन में ढरल चाँदनी।
बैरी कोइल के बोलिया सुहावन लगे,
प्रीत के डोर से जब बन्हल चाँदनी!

मो0 – 9431573580, 9955614581

◆

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ० निर्भीक : भाव भींजल श्रद्धांजलि

❑ दिनेश्वर प्रसाद सिंह 'दिनेश'

डॉ0 रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' भोजपुरी साहित्य साधना के शिखर पुरुष रहीं। डॉ0 निर्भीक के नाम भोजपुरी भाषा के विद्वानन में बहुत आदर के साथ लिहल जाला। भोजपुरी भाषा के विकास में इनकर बहुत बड़हन योगदान रहल बा। डॉ0 निर्भीक के यदि भोजपुरी भाषा के समर्पित सेवक आ कर्मयोगी कहल जाय त कवनो अतिशयोक्ति ना होई। निर्भीक जी सरलता, सहजता, शालीनता आ विनम्रता के प्रतिमूर्ति रहीं। इनका जइसन उदार हृदय, उज्जवल आचरण आ गम्भीर व्यक्तित्व वाला साहित्यकार बहुत कम देखे के मिलेला। निर्भीक जी शांत स्वभाव के अजातशत्रु रहीं। इनका ईर्ष्या, क्रोध, अहंकार आदि दुर्गुण से दूर रहे वाला साहित्यिक संत कहल जा सकेला।

डॉ0 निर्भीक एह 21 मई 2007 के अपना जीवन के पचहत्तरवाँ वसन्त पूरा कइनी। भोजपुरी के एह कर्मठ सपूत के जन्म 21 मई 1932 के बिहार के शाहाबाद जिला (अब बक्सर) के प्रसिद्ध गांव 'निमेज' में भइल। अपने के पिता पंडित ब्रह्मेश्वर ओझा जी अपना समय के हिन्दी आ ब्रजभाषा के चर्चित कवि रहलीं। निर्भीक जी के माता के नाम राम सँवारी देवी रहे। निर्भीक जी चार भाई आ एक बहिन रहले। भाई में सबसे छोट डॉ0 रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' भोजपुरी आ हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक के रूप में चर्चित भइलें।

भोजपुरी आ हिन्दी में लगभग दू दर्जन पुस्तकन के लेखक डॉ0 रसिक बिहारी ओझा के प्रारंभिक शिक्षा अपना गांवे भइल। आगे के पढ़ाई खातिर अपना मझिला भाई के साथ जबलपुर चल गइले आ 1951 में मैट्रिक के परीक्षा पास कइलें। कुछ दिन बाद 1953 में जमशेदपुर से भारतीय थल सेना में भर्ती हो गइलें आ सेना के सेवा में रहत इन्टर के परीक्षा पास कइलें। बाकिर फौज के नौकरी छोड़-छाड़ के 1959 में जमशेदपुर आ गइलें टेल्को के सेवा में। नौकरी आ पढ़ाई साथ-साथ शुरू भइल आ फेर त एक से एक सोपान पर चढ़त स्नातक, स्नातकोत्तर आ फेर डॉ0 सिद्धनाथ कुमार जी के मार्ग-दर्शन में **'बिहार की भोजपुरी लोक कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन'** विषय पर शोध-प्रबंध प्रस्तुत करके राँची विश्वविद्यालय से 1981 में पी-एच0 डी0 के सम्मानजनक उपाधि प्राप्त कइलें।

डॉ0 निर्भीक के विवाह 9 जून 1955 में श्रीमती प्रेम सुन्दरी देवी के साथ भइल। निर्भीक जी तीन पुत्र आ एक पुत्री के पिता बाड़ें। बड़ लइका श्री अभय कुमार ओझा व्यवहार न्यायालय, खगड़िया में सहायक के पद पर कार्यरत बाड़े। निर्भीक जी के मॉझिल लइका श्री अजय कुमार ओझा टाटा मोटर्स में कार्यरत बाड़े। अजय जी भोजपुरी आ हिन्दी के अच्छा लेखक बाड़ें। इनका के लेखन-प्रतिभा अपना पिता डॉ0 निर्भीक से विरासत में मिलल बा। 'निर्भीक संदेश' नामक पत्रिका के संपादन भी करिलें। निर्भीक जी के सबसे छोट पुत्र श्री विजय कुमार ओझा दिल्ली में निजी व्यवसाय कर रहल बाड़ें। निर्भीक जी के पुत्री श्रीमती कल्पना अजेय पाण्डेय के शादी श्री पाण्डेय अजेय वत्स के साथ भइल। निर्भीक जी के दामाद भारतीय वायुसेना से सेवानिवृत्ति के बाद दिल्ली में आपन व्यवसाय कर रहल बाड़ें।

डॉ0 रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' अपना जन्म भूमि से दूर, अपना माई-भाषा भोजपुरी के

www.bhojpurisahityangan.com

धजा लहरावत रहले जवना के सुकीर्ति सुगंध देश-विदेश में दूर-दूर तक फइलल बा। टाटा के इस्पात नगरी में 1955 में **जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्** के स्थापना एगो सुघटना रहे। परिषद् के गठन डॉ0 सत्यदेव ओझा, डॉ0 चन्द्रभूषण सिन्हा, डॉ0 बच्चन पाठक 'सलिल' आ श्री बालेश्वर राम यादव मिल के जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज में कइले रहलें। जेकर बागडोर बाद में निर्भीक जी आ जय बहादुर सिंह सम्हरलीं। अपने के तब ठनलीं भोजपुरी साहित्य में ओह कुल्हि विधन के उपलब्ध करावे के जवना के अब तक भोजपुरी में अभाव रहे। ई अपनहीं के कुशल नेतृत्व के परिणाम ह कि परिषद् धनाभाव के बावजूदो अपना साधन-सीमा में रहत लगभग तीन दर्जन साहित्यिक ग्रंथ-सुमन से भोजपुरी के ऑचर भरे में पहल कइलस जवना में से अधिकांश अपना-अपना विधा के पहिला आ बेजोड़ ग्रंथ बाड़े स।

सन् 1964 में प्रकाशित भोजपुरी के प्रथम रेखाचित्र संग्रह 'सुरतिया ना बिसरे' भोजपुरी साहित्य के अनमोल निधि बा। बाद में 'परिछाही' (स्वगत छाया नाट्य-1966), 'बुरबक बनलीं' (एकांकी संग्रह 1968), 'तमाचा' (बाल एकांकी संग्रह-1971) आदि त अपने के सृजनशीलता आ ललित-लेखन के एक से एक प्रतिमान बनले स। ललित साहित्य-सृजन के अलावे अपने का भोजपुरी के भाषायी एकरूपता खातिर हमेशा चिंतनशील रहलीं जवना के परिणति ह भोजपुरी के पहिला पूर्ण व्यवस्थित-प्रकाशित व्याकरण-ग्रंथ 'भोजपुरी शब्दानुशासन' (1975) जवन अपने के बड़का-बड़का विद्वानन के पांति में प्रतिष्ठित कइलसि। 'भोजपुरी नीति कथा' (विशाल लोक-कथा संग्रह-सागर के कुछ मोती : प्रकाशक भोजपुरी अकादमी, पटना - 1983), 'मेघदूत' (कालिदास प्रणीत मेघदूतम के सरल भोजपुरी भावानुवाद 1992) आदि अपने के अब तक के प्रकाशित ग्रंथ बाड़े स। लगभग पाँच हजार पृष्ठन में दू हजार से अधिका भोजपुरी लोककथा के संग्रह, दू हजार ले ऊपर भोजपुरी मुहावरा के संग्रह आ सर्वाधिक महत्वपूर्ण अपने के शोध-प्रबंध 'बिहार की भोजपुरी लोक-कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन' भोजपुरी साहित्य के अनमोल निधि बाड़े स। कतने शोधार्थी अपने के विशाल संग्रह आ परामर्शी सहायता से लाभ उठा के आज अपना क्षेत्र के नामी-गिरामी विद्वान बाड़ें।

सक्रिय लेखन के अलावे संपादनों के क्षेत्र में रसिक जी अपना क्षमता आ योगदान के प्रतिमान बनवले बानीं जवन भोजपुरी के पहिलका साक्षात्कार-साहित्य 'साक्षात्कार : भोजपुरी साहित्यकार (1973), शाहाबादी रचनावली (1982), हरिशंकर वर्मा स्मृति ग्रंथ (1989) आदि बेजोड़ ग्रंथन के अलावे जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के रजत-जयंती स्मारिका (1981), लुकार आ साखी (अनेक अंक) जइसन भोजपुरी पत्रिका आ ग्राम विकास केन्द्र, जमशेदपुर (चांडिल प्रखंड) के त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'ग्राम प्रवर्त्तक' आ जमशेदपुर के प्रतिष्ठित हिन्दी साप्ताहिक (अब बन्द) लौह-मजदूर (शाहाबादी स्मृति अंक 1981) के अतिथि संपादक के सम्पादन से सुस्पष्ट बा। अबले 'निर्भीक संदेश' पत्रिका के प्रधान संपादक रहीं।

दर्जनन साहित्यिक संस्थन से जुड़ल निर्भीक जी अभी ले जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना के प्रवर समिति सदस्य, भोजपुरी अकादमी, बिहार, पटना के कार्यकारिणी सदस्य आ दिनकर परिषद्, बिहार एसोसियेशन, साकची, जमशेदपुर के कार्यकारिणी सदस्य के रूप में समादृत रहीं।

जगत बन्धु सेवा सदन पुस्तकालय (जमशेदपुर), भोजपुरी परिवार (पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग), दिनकर परिषद् (बिहार एसोसियेशन, साकची, जमशेदपुर) आ जनता युवा मोर्चा (छोटा गोविन्दपुर, जमशेदपुर) से 1981 में, भोजपुरी साहित्य मंडल (बक्सर) से 1982 में, अखिल भारतीय

www.bhojpurisahityangan.com

अन्तरजनपदीय परिषद् (उजियार घाट, बलिया, उ0 प्र0) से 1985 में, भोजपुरी विकास समिति (छोटागोविन्दपुर, जमशेदपुर) से 1988 में आ भोजपुरी लोक (लखनऊ उत्तर प्रदेश) से 1991 में, सुबह सबेरे (ब्रह्मपुर, बक्सर) से 2003 में, भारतीय स्टेट बैंक, (ब्रह्मपुर शाखा) से 2004 में, विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बिहार के प्रांतीय अधिवेशन में जनहित परिवार, भोजपुर से 2004 में, लोक संस्कृति संस्थान (परसा, गाजीपुर) से 2005 में, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् से स्वर्ण जयंती के अवसर पर 2005 में, समाज कल्याण समिति, परसुडीह, जमशेदपुर से 2007 में सम्मान प्राप्त निर्भीक जी विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ (गाँधीनगर, भागलपुर) से 1984 में 'विद्यासागर' आ काव्य लोक (जमशेदपुर) से 1990 में 'विद्यालंकार' के मानद उपाधि के साथ-साथ भारत सेवाश्रम संघ (जमशेदपुर) से 'साहित्य शिरोमणि', अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन (पटना) से डॉ0 जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन सम्मान (देवघर अधिवेशन 1991), सिद्धनाथ-जगरनाथ सम्मान (1994) आ अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद्, उत्तर प्रदेश (लखनऊ) से भोजपुरी शिरोमणि (वाराणसी अधिवेशन 1994), भोजपुरी गौरव सम्मान (2001) के अलंकरण से विभूषित भइलीं।

निर्भीक जी आपन 'भोजपुरी शब्दानुशासन' खातिर 1981 में भोजपुरी अकादमी, पटना से आ ध्वनि रूपक 'हवा के बात' खातिर 1994 में अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन (पटना) से पुरस्कृत हो चुकल बानीं। साल 1994 में अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद् (लखनऊ) अपना वाराणसी अधिवेशन में अपने के श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी भोजपुरी भूषण पुरस्कार से सम्मानित कइलस। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) 'भोजपुरी शब्दानुशासन' के चयन प्रतिष्ठित हरिशंकर वर्मा पुरस्कार खातिर कइलस जवन सम्मेलन के चउदहवाँ अधिवेशन (मुबारकपुर, सारण 18-19 अक्टूबर, 1994) के अवसर पर प्रदान कइल गइल।

डॉ0 निर्भीक से हमार परिचय चालिस साल के रहे। हम उनका के बड़ भाई मानीला। दर्जनन साहित्यिक समारोह में हमनी का साथ रहल बानी। उनका से मिलल स्नेह, आदर, आशीर्वाद आ अनुजवत प्यार के भला हम कइसे भुला सकीला। उहाँ के आपन एह नश्वर शरीर के त्याग के अनन्त में लीन हो गइनी। एह श्रद्धांजलि–अर्पण अवसर पर हम ईश्वर से प्रार्थना कर रहल बानी कि निर्भीक जी के आत्मा के शांति मिले। महतारी भाषा भोजपुरी के भण्डार उनकर योगदान से सदैव समृद्ध आ ऋणी रही।

शिक्षा भारती मुद्रणालय
1/27, काशीडीह, जमशेदपुर - 831001
फोन - 2437379, 2439031

◆

गीत

खेलवना

❑ **बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'**

हमार बाबू रंगरेज अइसन गोर बाड़न हो
केसिया बुझाला जइसे करिया जमुनियाऽ,
अँखिया के काजरा चलावता छिकुनियाऽ,
लामी नकिया सुगनवा के ठोर बाड़न हो
रोवतारे कबो, कबो काट तारें मुसुकी,
मोहतारें मनवा चला-चला के उसुकी,
चोरी करतारें बाड़ा चितचोर बाड़न हो
थप-थप निकसे लिलार मे से जोती
जे तरे चमकेला हीरा अउरी मोती,
अइसन लागता आन्हारा के अंजोर बाड़न हो।

सचिव, सन्त यतीनाथ लोक सांस्कृतिक संस्थान, सुखपुरा, बलिया

◆

www.bhojpurisahityangan.com

तनी हँसी...

❑ शिक्षक – ओकर नांव बताव जे Pot (पॉट) बनावेला।
छात्र – Potter (पार्टेर)
शिक्षक – बहुत अच्छा, ओकर नांव बताव जे बॉक्स बनावेला।
छात्र – बॉक्सर।

❑ मरीज – डॉ0 साहेब चश्मा पेन्हला के बाद का हम पढ़ियो सकीला ?
डॉ0 – हँ, हँ, काहे ना ? जरूर पढ़ सकेल।
मरीज – जीहीं–जुड़ाई डाक्टर साहेब, एकावन बरिस ले अनपढ़ गँवार रहला के बाद आजु पढ़ि सकेब।

❑ शिक्षिक – राजू आज तूं 15 मिनट देर से क्लास में अइल ह, काहे ?
राजू – मैडम जी, माफ करीं। रास्ता में आवत खानी एगो सज्जन के 100 रुपया के नोट भूला गइल रहे आ बड़ी बेचैनी से खोजत रहन।
शिक्षिका – अच्छा–अच्छा, त तूँ खोजे में उनकर मदद करत रह। बहुत अच्छा।
राजू – ना मैडम जी, हम ओह नोट प गोड़ रख के ठाढ़ रहीं।

❑ शिक्षक – मोहन तीन गो कारण बताव, काहे पृथ्वी गोल बा ?
मोहन – हमार बाबूजी कहेले एह से, माई कहेली एह से आ रउआ कहीले एही से।

❑ शिक्षिका (नैतिक शिक्षा देत खाँ) – केहू बता सकेला, भगवान कहाँ निवास करेले ?
रोहित – (हाथ उठा के) बाथरूम में।
शिक्षिका – (अपना कान पर विश्वास ना करत आश्चर्य से) अइसन कइसे कह सकत बाड़ ?
रोहित – बाबूजी जी रोजे भोरे बाथरूम के दुआर प ठाढ़ होके चिचिआइले – 'हे भगवान तूं बाथरूम से कब बाहर निकलबे ?'

❑ मरीज – डाक्टर साहेब हमरा बहुते सर्दी–जुकाम भइल बा।
डाक्टर – (सहानुभूतिपूर्वक) त जाके जइसे कहतानी ओइसे कर। ठंढ़ा पानी से एक घंटा नहा के, दू घंटा वातानुकूलित (एयर कंडिशन्ड) कमरा में बइठ के, खूबे आइसक्रीम खा के, एकदम फ्रीज के ठंढ़ा पानी पीय।
मरीज – का ??? (मरीज एकदम उछल गईल) का ई सब हमरा के ठीक कर दी ?
डाक्टर – ना भाई (स्वीकारत) बाकिर एह सब से तोहरा निमोनिया जरूरे हो जाई, आ हम ओकर इलाज जानिला।

लोकगीत

भिखारी ठाकुर के सोहर

❑ प्रस्तुति : जगन्नाथ सिंह

भादों रहनी पावस परम, सोहावन हो लाल
रोहिनी में आइले सरकार, आइल बुधवार हो लाल
देवकी जी पति जी से कहलीं, निजहीं जेहल रहली हो लाल
लेइजावा जमुना के पार, जशोद्धा दरबार हो लाल
चली गइले जशोद्धा महलिया, न जानल केहू हलिया हो लाल
ऊपर से बरसेला बुनिया, सूतेला सारी दुनिया हो लाल
सूत गइले जेल-सूबेदार, सकल पहरदार हो लाल
कुंवर के दिहलन पार, कुंवरी ले तैयार होला हो लाल
हेली के जमुना के धार, अइले करतार हो लाल
धीरे-धीरे होला गुलजार, मचल हहाकार हो लाल
बाजवा करत बा अवाजवा, जशोद्धा दरवाजवा हो लाल
जुटल बारे नेटुआ नगार, बहुत बेसुमार हो लाल
बिजय के बाजेला नागरवा, भइल बा धुमधारवा हो लाल
गावेले भिखारी ललकार, पाइबो गले हार हो लाल

एन0 एम0 एल0, जमशेदपुर

◆

www.bhojpurisahityangan.com

प्रस्तुति : संगीता लाल

गाजर आइसक्रीम

सामग्री – 1/2 प्याला चीनी, चुटकी भर जायफल पाउडर, 1 प्याला दूध, 1 बड़ा चम्मच कार्नफ्लोर, 1 बड़ा चम्मच मक्खन, 4 बड़ा चम्मच मिल्क पाउडर।

विधि – कार्नफ्लोर के दूध में घोर के गाढ़ा होखे ले पकाईं। ठंडा होखे प चीनी, मक्खन, मिल्क पाउडर मिलाईं आ मिक्सी में फेंट लीं। अब क्रीम आ एसेंस डाल के फेंटी। 3–4 घंटा ले फ्रीज में जमा लीं।

गाजर के चीनी के साथे मध्यम आँच प काँटा से हिला के चीनी सूखे ले पका लीं। ठंडाहोखे प आइसक्रीम फ्रीज से निकाल के फेर से ओकरा के गाजर के साथे मिला के फेंट लीं आ जमा दीं। परोसत खानी आइसक्रीम के गाजर के लच्छा से सजा सकीला।

संदेश

सामग्री – 250 ग्राम छेना, 50 ग्राम चीनी, 10–15 धागा केसर, 1/2 छोटा चम्मच गुलाब जल, 1 बड़ा चम्मच कतरल पिस्ता।

विधि – छेना के थाली में रख के तब ले तरहथी से मिसी जब ले बारीक चिक्कन ना हो जाए। एगो नॉनस्टिक कड़ाही में चीनी आ छेना डाल के धीमा आँच प तब ले भूंज ली जब ले चीनी सूख जाए आ मिश्रण कड़ाही छोड़े लागे। अब एह मिश्रण के गोला बना के अंगूठा से बीच में दाब दीं आ केसर सटा दीं। गुलाब जल से ओह दबाव में पिस्ता के सटा दीही। लीं संदेश तैयार बा।

छेनामुरकी

सामग्री – 250 ग्राम छेना, 150 ग्राम चीनी, 4 बूंद केवड़ा एसेंस, 1 छोटा चम्मच दूध, एक चौथाई चम्मच पीसल इलायची।

विधि – 1/2 ईंच के टुकड़ा में कटल छेना के 5 मिनट ले गरम पानी में रख के निकाल लीं। चीनी में 1/2 प्याला पानी डाल के चाश्मी बनाईं। दूध डाल के चाशनी के साफ क लीं। 2 तार के चाशनी बना के पनीर के टुकड़ा ओह में डाल के सूखे ले चला लीं। एह में केवड़ा एसेंस आ इलायची डाल के छेना के टुकड़ा अलग–अलग होखे तक चलाईं। ठंढा होखे प परोसीं।

मुम्बई, मो0 – 9833024535

◆

गजल

❑ रिजवाँ वास्ती

हाय, कइसन मिलल जवानी बा
मेहमानी अब मेजबानी बा

उठ रहल बा धुआँ हिया से हमर
छऽल छऽल नयनवा में पानी बा

आगि लागल बा हमरा छतिया में
औ, हवा दर्द के तूफानी बा

जीयतानी वियोग में मर के
राउर इहे मेहरबानी बा

रात-दिन कट रहिल बा रो रो के
ईहो का कौनो जिन्दगानी बा

दुख आपन केकरा साथ बाँटल जाय
इहे एक नेह की निसानी बा

सांझ से भोर हो गइल 'रिजवाँ'
का अभी बचले कुछ कहानी बा ?

मो0 – 9431328905

◆

www.bhojpurisahityangan.com

चिट्ठी-पतरी

पूज्यनीया,

सम्पादक महोदया,

हम तो ई जानते ना रहनि कि भोजपुरी में अतना नीमन पत्रिका आवेला। जब से राउर 'अंगना' पत्रिका हमरा के रउरा से मिलल तब से एह पत्रिका के बेर–बेर पढ़े के मन करत बा। रउरा त जानते बानि कि हम प्राथमिक शिक्षक के तैयारी कर रहल बानी। आ क्षेत्रीय भाषा के रूप में भोजपुरी भाषा लेले बानी। ई पत्रिका हमरा खातिर गागर में सागर जइसन बा। ई पत्रिका के सभी नियमित कॉलम कहानी, निबंध, गीत, खास करके संपादकीय कॉलम बहुते नीमन लागल।

"दुःख शोक जेहू आवे
धीरज धर के सब सह।
मिली सफलता काहे ना
कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रह।"

गंगा प्रसाद

परसुडीह, जमशेदपुर,, मो0 – 9835373793

◆

आदरणीय,

संध्या दीदी,

मुख्य पृष्ठ पर हर क्षेत्र के सफल महिला लोग के फोटो से सजल अंगना मिलल। बहुत आछा लागल। सभ रचना नीक लगली स। 'मन के धरती' कविता बहुते आछा लागल।

नीतू सुदीप्ति राय

पो0 बॉ0 नं0 – 41, सिलवासा – 396230

◆

मान्या बहन,

संध्या जी,

महिला दिवस विशेषांक 'अंगना' अंक–6 मिलल। राउर सम्पादकीय आ 'मेघालय के मातृसत्तात्मक समाज' अंगना के अंजोर क देले बा। महिला विमर्श प बहुते धारदार...। अरूणा रामचन्द्र शानबाग के सैंतीस वर्ष के कोमा के जीवन दोबारा मन खउला देलस। भीतरी तक झकझोर देता। 'अंगना' में निखार आइल बा, रचनात्मक आ प्रकाशन दूनों स्तर प। निश्चित रूप से एह पत्रिका में सम्पादक, सम्पादक नजर आवता। दृष्टि, सजगता आ मेहनत हरेक पृष्ठ प झलकता। रउरा सम्पादकीय के पढ़ते ई आभास होता कि रावा में कुछ नया करे के बेचैनी बा...। भाई राम लखन विद्यार्थी के कहानी 'सीप के मोती' बहुत अच्छा लागल। रितुराज के देखि के गोस्वामी जी के खुशी होता ओइजे अपना बेटा के गिरफ्तारी देखि मुट्ठी में के सितुहा फेंका जाता। जिनिगी के धड़कन के साथे, बदलाव के चेतना। बहुत मार्मिक कहानी। ब्रज मोहन राय 'देहाती' के दृष्टिपरक व्यंग्य 'मलिकांव' बहुते निमन लागल। कुमार सिद्धि पाण्डेय के लघुकथा 'सहारा' आ रामावतार दुआ के 'ईनाम' सार्थक प्रयास बा।

भूमण्डलीकरण के बेयार में भहरात जीवन मूल्य के मूल्यांकन करत रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' के गजल, देश बचावे के चिन्ता से लबरेज यमुना तिवारी 'व्यथित' के कविता 'ए चाचा तोहार गुन गवलो ना जाला' योग गुरु रामदेव जी आ अन्ना हजारे के चिंता से तनिको कम नइखे। सुनीता सिंह के 'आइल बसंती बहार' आ किरण सिन्हा के 'मन के धरती' एगो अन्यतम आयाम लेके आइल बा। शेष रचना भी बेजोड़ बाड़ी स। राउर चयन आ ओकर सुसंबद्ध प्रस्तुतीकरण रउरा सम्पादकीय क्षमता के बताव ता। बहुत–बहुत धन्यवाद।

'अंगना' में प्रकाशित करे खातिर एगो टटका कथा 'बेटी बोललि...' आ रामयश 'अविकल' के गजल भेजतानी। प्रकाशित करब। खुशी होई।

विश्वास बा, अपने के सपरिवार स्वस्थ–प्रसन्न होखबि आ 'अंगना' के नया अंक के संपादन–संयोजन में लागल होखबि। 'अंगना' के उज्जवल भविष्य के कामना करत आ रावा स्नेहपतरी के बाट निहारत।

कृष्ण कुमार

आरा, बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

प्रिय बहन,

संध्या जी,

'अंगना' के अंक–6 (जनवरी–अप्रैल)मिलल। हम एक बरिस से दुर्घटना में घायल हो गइला से बहुत अस्वस्थ चल रहल बानी। एही से अबले पत्र व्यवहार भा कवनो लिखा पढ़ी ना क पवलीं। अब कुछ सुधार जरूर बा बाकि पढ़े–लिखे लायक अबहीं तक नइखीं। समय लागी। पतिदेव भी कई बेर बीमार हो गइलीं। सब कुछ समय के अधीन बा। 'अंगना' के कई गो रचना सूतल–सूतल पढ़ी गइलीं। अच्छा लागल। हमनी के शुभकामना बा।

डॉ0 राजेश्वरी शांडिल
लखनऊ

◆

आदरणीय,

संध्या जी,

विद्या आ कंठ के देवी सुरसती जी के नेह–छोह से नीमने रहत आशा करतानीं जे रउरो नीमने होखबि। रउरा कुशलता बदे हम भगवान से विनती करत रहीले। राउर दूगो अंक मिलल। मिलला के बाद खूबे पढ़नी, लेकिन पावती ना लिखलीं एकरा बदे हथजोरी बाटे। आशा बा जे रउरा क्षमा क देबि। दूनो अंक अपना में अद्भुत बाटे। कुछउ काटे जोग नइखे। हमहूँ आपन रचना पठा रहल बानीं। कोना–अंतरा में जगहा देबे के सोचबि। रउरा शुभ के आशा करत...

बृजमोहन प्रसाद अनारी

◆

प्रिय संध्या जी,

"अंगना" अंक–5 मिलल। आभार। घर परिवार के लायक एगो साफ–सुथरा पत्रिका देखि के मन गदगद भइल। कहानी, लोककथा, लघुकथा, निबंध, हास्य–व्यंग्य आ गीत–गजल–कविता सभ विधा के रचना के साथे विचार–विमर्श, स्वास्थ्य आ चउका–चूल्हा, सभ केहू आ सभ उमिर के अपना ओर खींच लेवे में सफल बा। रउवा के बहुत–बहुत साधुवाद।

एह अंक के हास्य–व्यंग्य 'सुपनेखा के पाती' महिला समाज के बढ़िया चित्र खींचत बा। खास क के नारी सशक्तिकरण के एह युग में।

दुसरकी रचना श्रीमती भारती चौधरी से डॉ0 जूही समर्पिता के बातचीत बा, जवन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जिनगी के कुछ झाँकी देत बा। पढ़ि के अच्छा लागल।

ई दूनो रचना विशेष आकर्षण बा एह अंक के। एह अर्धयुग में तेजी से टूटत परिवार आ उदास होत अंगना में ई 'अंगना' कुछ रौनक बढ़ाई अइसन उमेद बा।

सुरेश कांटक
कांट, ब्रह्मपुर, बक्सर, बिहार

◆

आदरणीय संपादक जी,

अपने के 'अंगना' (अंक–5) हमरा आरा के श्रद्धेय श्री चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के द्वारा प्राप्त भइल। का कहीं अपने के संपादकीय में व्यक्त विचार पढ़ के मन श्रद्धा से भर गइल। आज के भागमभाग जिनगी में ऊ भी भोजपुरी पत्रिका के प्रकाशन आ पठन–पाठन। मगर पुरखा, पुरनिया लोग के अमूल्य भोजपुरिया थाती के संरक्षण, संबंधों या विकास कौनो वीर महिला आ पुरुष हित कर सकत बा।

हमनी सभे देखा देवल जाव कि भोजपुरिया माटी के गंध कौने दोसर भाषा से ज्यादा सुगंधित बा। हम अपने के अब बेसी समय ना लेहब।

सुरेन्द्र प्रसाद गिरि
ग्राम+पो0 – पिप्राढ़ी–4, जिला – बारा,
नेपाल, भाया – रक्सौल–845305
पूर्वी चम्पारण, बिहार

◆

रचनाकार लोगिन से अनुरोध बा कि कहीं आउर ठहर भेजल रचना के पुनः पत्रिका खातिर जनि भेजीं।

– प्र0 सम्पादक

www.bhojpurisahityangan.com

A unique website to download 11 exclusive books absoutely free

The Website has :

- ❑ **5 inspirational books are education - a must for all**
- ❑ **5 books on modern Hindi poetry with extraordinary expressions**
- ❑ **1 book on Indian Bonsai**

Plus get to see photo gallery of Rajasthan, Kashmir, Ladakh, Kerala, Andaman and Nicobar, Sunderban (Kolkata), Hyderabad etc.

All by

NARESH AGRAWAL

Mob. - 09334825981

E-mail id - smcjsr77at gmail.com

Please visit :- www.nareshagarwala.com., Jamshedpur

तनी एनहूँ देखीं

...क्योंकि महिलाएं अधिक जिम्मेदार हैं

❑ सत्येन्द्र कुमार

टाटा की कंपनियों में महिलाओं के वर्चस्व का आगाज हो चुका है। जमशेदपुर में टाटा आटो कंपोनेंट लिमिटेड के एक प्लांट में कुल कार्यबल में 70 प्रतिशत महिलाएं है। यानी यहां पुरुष कामगार अल्पमत में है। टाको ग्रुप की यह कंपनी (टाटा याजाकी ऑटो कंपोनंट लिमिटेड) टाटा मोटर्स के लिए वायर हारनेस का उत्पादन करती है। यहां महिलाओं की सशक्त उपस्थिति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहां की एसेम्बली लाइन पूरी तरह से महिलाओं के हवाले है।

कामगारों की विशेषता :–

❑ *धैर्य रखने की शक्ति* ❑ *कार्यस्थल पर सतर्कता* ❑ *चयन करने की क्षमता*

पिछले वर्ष शुरू हुई इस प्लांट में कुल 243 कामगार हैं। इनमें पुरुषों की संख्या मात्र 47 है। यहां तक कि इसमें महिला इंजीनियर भी काफी संख्या में हैं।

कंपनी ने पाया है कि महिलाओं का नौकरी करना उसके लिए ज्यादा फलदायक है। टाटा ऑटो कंपोनेंट लिमिटेड के जनरल मैनेजर व प्लांट हेड प्रणय कुमार के अनुसार, 'हमने पाया कि महिलाएं पुरुष कामगारों की तुलना में न केवल ड्यूटी से बहुत कम अनुपस्थित रहती हैं बल्कि वे कार्यस्थल पर तुलनात्मक रूप से ज्यादा अनुशासित और उत्पादक है।'

(हिन्दुस्तान, 1 अगस्त 2011 से साभार)

www.bhojpurisahityangan.com

बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम : सोनहरा भोर के किरिण

सन् 2002 में संविधान के 86वाँ संशोधन के बादे शिक्षा के संविधान के मौलिक अधिकार में जोड़ल गइल आ एकरा खातिर सन् 2009 में 'निःशुल्क आ अनिवार्य शिक्षा पावे के अधिकार–अधिनियम पारित कइल गइल। आखिरकार 1 अप्रैल 2010 से एह अधिनियम के प्रभावी बनावल गइल।

एह अधिनियम के द्वारा ई सुनिश्चित हो गइल कि भारत में 6 से 14 बरिस के सब लइकन के विधिक तौर निःशुल्क आ अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करे के अधिकार बा। जेकर जिम्मेवारी सरकार के बा।

निःशुल्क आ अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार विधेयक–2009 के प्रमुख प्रावधान –

- ❑ 6–14 बरिस के एक–एक लइकन के निःशुल्क आ अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करे के अधिकार।
- ❑ देश भर में 6–14 बरिस के सभ लइकन के 8वीं ले पढ़ाई नजदीक के स्कूल में दिवावे के।
- ❑ सभ केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय, सैनिक आ सरकारी सहायता से मुक्त स्कूलन में कम से कम 25 प्रतिशत विद्यार्थी वंचित आ गरीब वर्ग से लेवे के बाध्यता बा।
- ❑ सभ लइकन के स्कूल मिले, अभिभावक आ स्थानीय समुदाय के लोगिन के एकर जिम्मेवारी बा।
- ❑ एह अधिनियम के समुचित लागूकरण खातिर खरच केन्द्रीय (60%) आ राज्य (40%) सरकार के मिल्लत से होई।
- ❑ निजी स्कूलन द्वारा नामांकन खातिर डोनेशन भा कैपिटेशन के नाँव प पइसा लेवे प 10 गुणा जुर्माना लागी।
- ❑ प्राथमिक कक्षा में नामांकन खातिर जाँच परीक्षा नइखे लेवे के, ना त 25 से 50 हजार ले जुर्माना लाग जाई।
- ❑ कक्षा 8 ले कवनो बच्चा के फेल करे भा स्कूल से निकाले भा एके क्लास में रोके प प्रतिबंध बा।
- ❑ बिना मान्यता के कवनो स्कूल नइखे स्थापित करे के। ना त संबंधित व्यक्ति/संस्था प कम से कम 1 लाख भा 10,000 हजार रुपया प्रतिदिन के जुर्माना ठहरी।
- ❑ कानून लागूकरण के 6 महीना के भीतरे शिक्षक के रिक्त स्थान भरल जाओ
- ❑ छात्र–शिक्षक अनुपात (1:30) के पालन जरूरी बा।
- ❑ कक्षा 6 से 8 जे हरेक विषय प एक शिक्षक होखे के चाहीं।
- ❑ शिक्षकन द्वारा निजी–ट्यूशन प प्रतिबंध बा
- ❑ चुनाव, जनगणना भा आपदा आदि खातिर शिक्षकन के ओह कार्य व ड्यूटी ना लागी।
- ❑ कक्षा 5 ले 200 दिन आ कक्षा 6 से 220 दिन विद्यालय में पढाई जरूरी बा।

देश के 20 करोड़ से बेसी लइकन के निःशुल्क आ अनिवार्य शिक्षा खातिर लगभग 1,71484 करोड़ रुपया के जरूरत होखी। देश के सर्वांगीण विकास के सोनहरा भोर के एह किरिण के अंगना पत्रिका परिवार तहे–दिल से स्वागत करत बा।

Shiksha_CM.pm-P1.assg